REVELATION 21 SERIES, STUDIES #1 THRU #5, by Chris McCann-Hindi

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन **#1 - #5** क्रिस मॅकन – हिन्दी

Revelation 21 Series, Study #1 by Chris McCann, originally aired , May 21, 2015

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 1, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 21 मई 2015

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 1 है, और हम प्रकाशित वाक्य 21:1 पढेंगे :

फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।

यहाँ पर प्रभु प्रेरित यूहन्ना को नए स्वर्ग और नई पृथ्वी का दर्शन दिखाता है, और कहता है, *"फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।"* और हम जानते हैं कि यह परमेश्वर के वचन ने घोषित किया है और हम मानवजाति के पतन के समय से जगत के संपूर्ण इतिहास में उसकी ओर आगे बढ़ रहे हैं। संसार अस्थायी है और इस जगत में मनुष्य का जीवन कुछ समय का है। परंतु यह 'एक पल के लिए' है। परमेश्वर ने कहा है कि पाप के कारण मनुष्य मरेगा। सृष्टि ने भ्रष्टता देखी, और इसलिए, संपूर्ण सृष्टि (पृथ्वी, स्वर्ग और आकाश की वस्तुएँ) को नष्ट होना है। पाप की वजह से और पाप के परिणामों के कारण और विश्व पर आए श्राप के कारण संपूर्ण विश्वास का नाश किया जाना और हटा दिया जाना अवश्य है। परमेश्वर ने हमें चेतावनी दी है कि हम जगत से प्रेम न करें क्योंकि वह बना न रहेगा। परमेश्वर ने 1 यूहन्ना 2:15–17 में यही कहा है :

तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। और संसार और उस की अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा॥

जगत मिट जाता है। परमेश्वर ने प्रकाशित वाक्य 21:1 के संदर्भ पद में यह भी कहा है :

फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।

जिस ग्रीक शब्द का अनुवाद 'जाती रही थी' के रूप में किया गया है वह स्ट्रॉंग शब्द सूची में # 3928 है, और वह अन्य स्थान में भी इसी तरह उपयोग किया गया है। उदाहरण के तौर पर, हम लूका 21:32–33 में पढ़ते हैं :

मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें न हो लें, तब तक इस पीढ़ी का कदापि अन्त न होगा। आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी॥

परमेश्वर तीन सुसमाचारों में यह कहता है। वह मत्ती 24, मरकुस 13 और यहां लूका 21 में यह कहता है : *"मैं तुमसे सच कहता हूं कि जब तक ये सब बातें न हो लें, तब तक इस पीढ़ी का कदापि अन्त न होगा। आकाष और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।"* यह इस बात को दर्शाता है कि पृथ्वी सीमित और अस्थायी है और हमेशा तक टिका नहीं रहेगा, परंतु परमेश्वर का वचन सनातन और असीम है और हमेशा बना रहेगा।

जब लोग यह विचार सुनते हैं कि इस बात की गहरी संभावना है कि संसार का नाश होगा, तब लोग इस संसार के विषय में जो कहते हैं, उस पर विश्वास न करें। जब उन्होंने 21 मई 2011 को न्याय के दिन के रूप में सुना और जब उन्होंने 7 अक्तुबर 2015 को भी जगत के अंत के विषय में सुना, तब जगत के उद्धार न पाए हुए लोगों की प्रायः सार्वत्रिक प्रतिक्रिया अत्यंत सामान्य और पूर्वानुमय है। तुरंत इन्कार किया जाता है। वे कहते हैं, "यह बिल्कुल संभव नहीं है," और उन्हें पूरा भरोसा है (इसे बताने का दूसरा तरीका नहीं है) की संसार बना रहेगा। इस भरोसे के पीछे उनका यह विचार है कि यह संसार सनातन है। वैज्ञानिक उन्हें यह बताते हैं कि यह संसार खरबों वर्षों पुराना है और आगे भी खरबों वर्षों तक बना रहेगा। विकासवाद में यही सिखाया जाता है, जगत यहाँ कल्पों से है और विकासक्रम की प्रक्रिया अत्यंत धीमी है। इसलिए जब वे कहते हैं कि जगत खरबों वर्षों से अस्तित्व में है, तब वे मूलतः कहते हैं कि वह हमेशा से रहा है और संभवतः और खरबों वर्षों तक बना रहेगा। ये लोग सोचते हैं कि इस संसार का अंत होगा यह बात हास्यास्पद है। शायद वे इस विचारपर इसलिए आए है कि इस जगत को मूल सृष्टि के आधार पर बने रहना अवश्य है, क्योंकि परमेश्वर ने जगत को 'अच्छा' बनाया और उसने मानवजाति को 'अच्छा' बनाया। यदि मनुष्य अपनी मूल पापरहित अवस्था में बना रहता, तो यह संसार हमेशा के लिए अस्तित्व में रहता और मनुष्य भी हमेशा के लिए रहते, इसलिए मनुष्य में उस कल्पना का चिन्ह या अवशेष है कि इस जगत को जारी रहना है, परंतु परमेश्वर कहता है, ऐसा नहीं है। हम 1 यूहन्ना के 2 रे अध्याय में पढ़ते हैं, *"और संसार मिटता जाता है।"* यहाँ लूका के 21 वे अध्याय में लिखा है, *"आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे।"* यह बाईबल की सच्चाई है। परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता और जो अन्त की बात आदि से जानता है, वह जगत का सृजनहार है और वह घोषणा करता है कि यही एकमात्र तरीका है। इस विषय में कोई सवाल नहीं है। यह कब होगा इस विषय में प्रश्न हो सकते हैं और हमने उस विषय में खोजबीन की है, परंतु जगत का अंत होगा इस विषय में कोई सवाल नहीं है। यह जगत नाश होगा और मिट जाएगा।

परमेश्वर 2 पतरस 3:10—13 में कहता है :

परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाऐंगे। तो जब कि ये सब वस्तुएं, इस रीति से पिघलने वाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए। और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करना चाहिए; जिस के कारण आकाश आग से पिघल जाएंगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएंगे। पर उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिन में धार्मिकता वास करेगी॥

यहाँ पर, परमेश्वर फिर से कहता है कि आकाश मिट जाएगा और वह एक हुबहू वर्णन देता है कि आकाश बड़े शब्द से मिट जाएगा और पृथ्वी के तत्व भयंकर गर्मी से पिघल जाएंगे। इन्हीं वचनों में वह उल्लेख करता है कि परमेश्वर के लोग नए आकाश और नई पृथ्वी की बाट जोहते हैं क्योंकि ऐसा इस संसार के विनाश के साथ ही होगा।

हम अच्छी अपेक्षा के साथ इसका इंतज़ार करते हैं। मैं जानता हूँ कि यह सुनना कुछ लोगों के लिए मुश्किल है और वे अपने सिर हिलाते हैं। वे बाईबल को और परमेश्वर द्वारा उसके लोगों को दी गई प्रतिज्ञाओं को नहीं समझते, परंतु परमेश्वर के लोग बड़ी उम्मीद से उस समय की बाट जोहते हैं जब परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेगा और अपने लोगों को नई पुनरूत्थित देह देकर उन्हें पूरा उद्धार देगा। उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब को जो प्रतिज्ञाएं लंबे समय पहले दी थीं कि वे निवास स्थान के लिए सनातन धन पाएंगे, उन्हें वह पूरा करेगा। प्रभु ने नए आकाश और पृथ्वी के प्रतीक और तस्वीर के रूप में कनान देश का उपयोग किया। कनान का भौतिक देश इस वर्तमान जगत का हिस्सा है और हम 2 पतरस 3 में पढ़ते हैं कि यह संसार पिघल जाएगा और इसमें कनान देश का समावेश होगा, अतः यह परमेश्वर के लोगों का सनातन निवास स्थान नहीं हो सकता। कनान नई पृथ्वी का प्रतीक है और परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की कि वह उस भूमि को प्राप्त करेगा और उसमें सदा वास करेगा। हम फिर उसे उत्पत्ति 17:7—8 में देखेंगे :

और मैं तेरे साथ, और तेरे पश्चात पीढ़ी पीढ़ी तक तेरे वंश के साथ भी इस आशय की युग युग की वाचा बान्धता हूं, कि मैं तेरा और तेरे पश्चात तेरे वंश का भी परमेश्वर रहूंगा। और मैं तुझ को, और तेरे पश्चात तेरे वंश को भी, यह सारा कनान देश, जिस में तू परदेशी हो कर रहता है, इस रीति दूंगा कि वह युग युग उनकी निज भूमि रहेगी, और मैं उनका परमेश्वर रहूंगा।

पुनः, उसे शाब्दिक तौर पर भौतिक कनान देश के रूप में समझा नहीं जा सकता। जो लोग बाईबल की शाब्दिक समझ का आग्रह करते हैं, सब तरह का विरोधाभास करने लगते हैं, जिसे वे सुलझा नहीं सकते। इसलिए वे सोचने लगते हैं कि परमेश्वर अनंत मिरास के रूप में कनान देश देगा, परंतु क्या परमेश्वर यह नहीं कहता कि वह इस संसार को नाश कर देगा? जी हाँ, वह ऐसा कहता है और 2 पतरस का 3 रा अध्याय मुख्य स्थान है, परंतु कई स्थानों में परमेश्वर इस बात पर जोर देता है कि वह जगत का नाश करेगा। परमेश्वर जगत का नाश करेगा, तब कनान देश का क्या होगा? क्या परमेश्वर कनान देश छोड़कर बाकी पूरे संसार को नाश कर देता है? क्या परमेश्वर कनान देश को छोड, आकाश और सूरज और चांद और तारों और पृथ्वी को 99.9 प्रतिशत नाश करता है? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। परमेश्वर बाकी पृथ्वी के साथ कनान देश को भी नाश करेगा। पुनः, हम बाईबल के गहरे, आत्मिक आयाम को समझने की श्रेष्ठता और आवश्यकता को देखते हैं। यदि आप आत्मिक शिक्षा के लिए बाईबल में नहीं देखेंगे, तो आप गलत निष्कर्षों पर आ पहुंचेंगे। जो लोग पवित्र शास्त्र के केवल शाब्दिक अर्थ को खोजते हैं, वे सत्य से लाखों मील दूर हैं। सत्य यह है कि दीन लोग पृथ्वी के वारिस होंगे। अब्राहम की संतान इस पृथ्वी की वारिस बनेगी और यह उनकी सनातन संपत्ति होगी और सनातन निवास का स्थान होगी और इस नई पृथ्वी के दीन लोग वारिस बनेंगे। तब हमारे पास मेल होगा और सब कुछ अनुरूप बैठता है और यह केवल उत्पत्ति की पुस्तक में अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा की आत्मिक समझ के द्वारा होता है। अर्थात, संपूर्ण बाईबल को इसी तरह समझा जाना चाहिए। आपको गहरा आत्मिक अर्थ खोजना है और उसके बाद सब प्रकार के वचन सही स्थान में आकर उनका मेल बनता है।

प्रकाशित वाक्य के 21 वें अध्याय के हमारे इस पद में, परमेश्वर ने प्रकाशित वाक्य 21:1 में कहा है :

फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।

परंतु 2 पतरस 3:13 में लिखा है :

पर उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिन में धार्मिकता वास करेगी॥

इसलिए, हां, संभव है कि 7 अक्तुबर 2015 को इस वर्तमान आकाश और पृथ्वी का नाश होगा, परंतु उसी समय परमेश्वर नया आकाश और नई पृथ्वी बनाएगा। यदि हम सही हैं, तो यह उस समय होगा। वह समय का समापन होगा और आकाश की वस्तुएँ नाश हो जाएगी और इस संसार में आकाशिय 'घड़ी' जो समय को चलाती है, वह भी नाश हो जाएगी और हम अनंत काल में प्रवेश करेंगे।

यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार है, इसलिए हम कुछ स्थानों की ओर देखेंगे जहाँ परमेश्वर इस बात की प्रतिज्ञा करता है। यशायाह 65:17–18 में लिखा है :

क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करने पर हूं, और पहिली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएंगी। इसलिये जो मैं उत्पन्न करने पर हूं, उसके कारण तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मगन रहो; क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को मगन और उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊंगा।

मैं यहाँ एक पल रूक जाऊंगा और पढ़ूंगा कि प्रकाशित वाक्य 21:2 में अगला वचन क्या कहता है :

फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो।

यशायाह 65 में लिखा है कि वह नया आकाश और नई पृथ्वी बनाएगा और वह *"यरूशलेम को मगन और उसकी प्रजा को आनंदित बनाएगा।"* यह स्वर्गीय यरूशलेम है जिसमें परमेश्वर के सभी चुने हुए हैं। उसे ''मसीह की दुल्हन'' भी कहा गया है, इसलिए परमेश्वर ने लोगों को बनाया और वह 'देश' (नई पृथ्वी) बनाता है जहाँ उसके लोग हमेशा के लिए वास करेंगे। इसी विषय में हम पढ़ रहे हैं और यह अद्‌भुत से परे है और यह परमेश्वर की प्रत्येक संतान की अपेक्षा है।

आप जानते हैं कि परमेश्वर की ये प्रतिज्ञाएं सांत्वनादायक हैं। 1 थिस्सलेनियो 4 में परमेश्वर कलीसिया के उठा लिए जाने और पुनरूत्थान के दिन के विषय में बोलता है जब उसके लोग सदा के लिए परमेश्वर के साथ होने के लिए उठा लिए जाएंगे और उसके बाद उसने कहा, *''इन शब्दों से एक दूसरे को सांत्वना दिया करो।''* यह परमेश्वर की संतान को परीक्षाओं, क्लेशों, दुखों और रोगों में और परिवार, मित्रों और पड़ोसियों की मृत्यु में सांत्वनादायक है। मृत्यु और रोग और भ्रष्टता और पाप इस संसार में हमारे चारों ओर हैं और धर्मी व्यक्ति का प्राण प्रति दिन क्लेशित होता है, क्योंकि हम इस संसार में मुसाफिरों के समान में वास करते हैं।

परंतु हमारी नागरिकता स्वर्गीय राज्य में है। हमारी नागरिकता नए यरूशलेम में है, इसलिए परमेश्वर अपना वचन और प्रतिज्ञाएं देता है और वह हम से कहता है कि हम अपने विचारों को पुनरूत्थान के लक्ष्य के ऊपर रखें और उस समय की आशा करें जहाँ पर हमारे शरीर बदल जाएंगे। हम पूर्ण रूप से नई सृष्टि होंगे – पुरानी बातें बीत गई और हम शरीर और प्राण में पूर्ण रूप से नई सृष्टि होंगे और हम नए आकाश और नई पृथ्वी में वास करेंगे। यह अत्यंत महिमामय और अति अद्‌भुत होगा और हम बहुतायत के धन को और अनंतकालिक आनंद, सुख, शांति और प्रेम को अनुभव करेंगे।

हम अब तक वहाँ नहीं पहुंचे हैं। हम अब भी संसार में हैं और अब भी हम पर समय का बंधन है। सूर्य उदय होता हैं और सूर्य डूबता है और हम सब बूढ़े होते हैं, परंतु हमें धीरज धरना है और आशा करते रहना है और ''प्रतिफल की क्षतिपूर्ति'' की बाट जोहते रहना है क्योंकि परमेश्वर की प्रत्येक संतान के लिए बड़ा प्रतिफल रखा हुआ है। इसलिए हमारे बोझ को हल्का करने और हमारे क्लेशों को कम करने के लिए यह आत्मा का विश्राम है। यह उस भविष्य का विश्राम है जो तुलना से परे हैं और उस हर बात के ऊपर है जिसकी कोई भी कल्पना नही कर सकता है। यह यथासंभव महानतम भविष्य है और यह हमारा भविष्य है।

इसलिए परमेश्वर की प्रतिक्षा करे। आज लगातार उसकी प्रतिक्षा करे। परमेश्वर से कोई मांग ना करे और ना ही उसे निर्देश दे। ऐसा करने का साहस ना करे, क्योंकि हम किसी के भी योग्य नही है। हम कुछ समय तकलीफ और कठोर परिक्षा सहते है, पर वह अच्छा है। क्या हम कोई अच्छाई के काबिल है? कभी कभी जब हम इन बातों से निकलने की जल्दबाजी करते है, तब यह मानों लगभग ऐसा है कि हम परमेश्वर से कह रहें है : "देख, मैं इस तकलीफ के लायक नही हुँ। इस तरह से मेरी परिक्षा हो, इस योग्य मैं नही हुँ!" खैर, ऐसा कहनेवाले आप या मैं कौन है? ऐसी प्रतिक्रिया करनेवाले हम आखीर कौन है? हो सकता है कि, शायद हम ऐसा ना कहे, पर शायद हम ऐसी प्रतिक्रिया दे। हम मानो ऐसी प्रतिक्रिया दे रहे है जैसे कि हम नयी पृथ्वी के वारिस नही है, और ना अनंन्त आनन्द और अनंन्त धन के वारिस है। हम ऐसा बर्ताव नही करते, पर हम ऐसा बर्ताव करते है जैसा कि मानो हम सर्वश्रेष्ठ के लायक है, और हमें इस वर्तमान "आग" में नही होना चाहिए, पर हमें यहोवा की महिमा उपद्वीव में करनी चाहिए, उसकी महिमा हमें आग में करनी चाहिए, और आओं, हम मसीह के अच्छे सैनिक की तरह तकलिफे सहे, और अंत तक सहे। जब वह अपनी सुइच्छा के कारण हममें उसकी इच्छा और कार्य करता है तब हम में से हर एक उसकी महिमा करें।

आगे यशायाह 65:19–22 में लिखा है :

मैं आप यरूशलेम के कारण मगन, और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित हूंगा; उस में फिर रोने वा चिल्लाने का शब्द न सुनाई पड़ेगा। उस में फिर न तो थोड़े दिन का बच्चा, और न ऐसा बूढ़ा जाता रहेगा जिसने अपनी आयु पूरी न की हो; क्योंकि जो लड़कपन में मरने वाला है वह सौ वर्ष का हो कर मरेगा, परन्तु पापी सौ वर्ष का हो कर श्रपित ठहरेगा। वे घर बनाकर उन में बसेंगे; वे दाख की बारियां लगाकर उनका फल खाएंगे। ऐसा नहीं होगा कि वे बनाएं और दूसरा बसे; वा वे लगाएं, और दूसरा खाए; क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी, और मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएंगे।

Revelation 21 Series, Study #2 by Chris McCann, originally aired , May 22, 2015

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन – 2, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 22 मई 2015

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 2 है और हम प्रकाशित वाक्य 21:1 पढेंगे :

फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।

हमारें पिछले अध्ययन में हमने कुछ ऐसे शास्त्र लेखों कि ओर देखा जहाँ परमेश्वर इस वर्तमान पृथ्वी के टल जाने और नयी पृथ्वी और नए स्वर्ग की सृष्टी किये जाने का वर्णन करते है। यह वैसा ही है जो परमेश्वर उनके विषय में कहता है, जिन्हें उसने उद्धार दिया। "पुराना" मनुष्य जाता है और सब बाते नई हो जाती है, वह परमेश्वर की संतान को "नई" सृष्टी बनाता है, और परमेश्वर इस संसार के साथ, जो भ्रष्ट हो चुका है, यही करने जा रहे है। जब मनुष्य पाप में गिरा तब परमेश्वर ने इस संसार को भ्रष्टता के अधीन कर दिया, और अब वह नयी पृथ्वी और नया स्वर्ग उत्पन्न करेगे।

हमनें प्रकाशित वाक्य 21:1 के अंतिम भाग को छोड, हर बात की ओर देखा।

.....और समुद्र भी न रहा।

हमें इस बात का आश्चर्य होता है कि परमेश्वर संसार के इस भाग पर क्यों जोर दे रहे है, जबकि "समुद्र" पृथ्वी का ही हिस्सा है। जब वह कहता है "पहली पृथ्वी जाती रही थी" उसमें "समुद्र" भी है। आप उसे अलग नही कर सकते, क्योंकि पर्वत, जमीन और सारे समुद्र सब इसी पृथ्वी के हिस्सें है, और यदि पृथ्वी जाती है तो पृथ्वी का केवल कोई एक हिस्सा नही जाता है, बल्की सारी पृथ्वी जाती है, और इसलिए यह स्पष्ट है कि समुद्र भी उसके साथ जाता है, और इसलिए हमें आश्चर्य होता है कि परमेश्वर इस कथन की ओर क्यों हमारा ध्यान खिंच रहें है – "**और समुद्र भी न रहा।**."

नयी पृथ्वी कैसी होगी, हम नही जानते, पर हम इतना जान सकते है कि वह दर्शनिय और महिमायुक्त होगी, पर वह सृष्टी कैसी होगी, हम नही जानते। वह इस वर्तमान शापित सृष्टी से कई ज्यादा बेहतर होगी, यह हम जानते है, पर परमेश्वर क्यों कहते है – **दुष्ट तो लहराते समुद्र के समान है**? इस प्रश्न के उत्तर का अभिप्राय समुद्र के आत्मिक अर्थ से है। बाईबल में "समुद्र" शब्द सुसमाचार के कामों की ओर संकेत करता है, यही पर मछलीया पाई जाती है और मछलियों की बराबरी ''मनुष्यों'' से की गई है। परमेश्वर "खौलतें समुद्र" की तुलना दुष्टों से करते है, क्योंकि वह यशायाह 57 में कहते है '' **दुष्ट तो**

लहराते समुद्र के समान है ।'' झुठे भविष्यद्वक्ताओं की बराबरी '' **लहराते समुद्र** '' से की गई है। हवाँ तुफानी होती है, और उससे समुद्र खैलता है, इस प्रकार वें ''**लहराते**.'' मनुष्य भी है।

तौभी, हमारे संदर्भ पद में ''समुद्र'' '' **लहराते**'' नही बताया गया। यदि ऐसा लिखा होता तो हम सोच सकते थे कि इसका संबंध दुष्टों से है, परंतु यहाँ केवल इतना लिखा है कि ''समुद्र'' न रहा। ''समुद्र'' किसका प्रतिक है इसकी आत्मिक व्याख्या खोजने जब हम बाईबल में देखते है, तब हम पातें है कि यह परमेश्वर के उस क्रोध की ओर संकेत करता है, जो मनुष्यों पर उनके पापों के कारण आता है। उदाहरण के लिए निर्गमन के 14 वे अध्याय में मिस्रियों ने लाल समुद्र तक इस्राएलियों का पिछा किया, और फिर परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए युद्ध किया, हम निर्गमन 14:27–31 में पढते है :

तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया, और भोर होते होते क्या हुआ, कि समुद्र फिर ज्यों का त्योंअपने बल पर आ गया; और मिस्री उलटे भागने लगे, परन्तु यहोवा ने उन को समुद्र के बीच ही में झटक दिया। और जल के पलटने से, जितने रथ और सवार इस्राएलियों के पीछे समुद्र में आए थे, सो सब वरन फिरौन की सारी सेना उस में डूब गई, और उस में से एक भी न बचा। परन्तु इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर हो कर चले गए, और जल उनकी दाहिनी और बाईं दोनों ओर दीवार का काम देता था। और यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों को मिस्रियों के वश से इस प्रकार छुड़ाया; और इस्राएलियों ने मिस्रियों को समुद्र के तट पर मरे पड़े हुए देखा। और यहोवा ने मिस्रियों पर जो अपना पराक्रम दिखलाता था, उसको देखकर इस्राएलियों ने यहोवा का भय माना और यहोवा की और उसके दास मूसा की भी प्रतीति की॥

यहाँ पर हम देखते है कि कैसे परमेश्वर ने फिरोन और उसकी सेना का नाश करने के लिए अपने क्रोध के हथियार के रूप में समुद्र का उपयोग किया, वें शैतान और उसके राज्य के संसार के उद्धार न पाए हुए लोगों का प्रतिक है। यह एक ऐतिहासीक जीवन्त दृष्टांत है, जिसमें न्याय का दिन और दुष्टों के विनाश की तस्वीर है, जो परमेश्वर के राज्य के शत्रु है। वें समुद्र में डूब गए, और आगे निर्गमन 15:1–10 में लिखा है :

तब मूसा और इस्राएलियों ने यहोवा के लिये यह गीत गाया। उन्होंने कहा, मैं यहोवा का गीत गाऊंगा, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है; घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में डाल दिया है॥ यहोवा मेरा बल और भजन का विषय है, और वही मेरा उद्धार भी ठहरा है; मेरा ईश्वर वही है, मैं उसी की स्तुति करूंगा, (मैं उसके लिये निवासस्थान बनाऊंगा), मेरे पूर्वजों का परमेश्वर वही है, मैं उसको सराहूंगा॥ यहोवा योद्धा है; उसका नाम यहोवा है॥ फिरौन के रथों और सेना

को उसने समुद्र में डाल दिया; और उसके उत्तम से उत्तम रथी लाल समुद्र में डूब गए॥ गहिरे जल ने उन्हें ढांप लिया; वे पत्थर की नाईं गहिरे स्थानों में डूब गए॥ हे यहोवा, तेरा दहिना हाथ शक्ति में महाप्रतापी हुआ हे यहोवा, तेरा दहिना हाथ शत्रु को चकनाचूर कर देता है॥ और तू अपने विरोधियों को अपने महाप्रताप से गिरा देता है; तू अपना कोप भड़काता, और वे भूसे की नाईं भस्म हो जाते हैं॥ और तेरे नयनोंकी सांस से जल एकत्र हो गया, धाराएं ढेर की नाईं थम गईं; समुद्र के मध्य में गहिरा जल जम गया॥ शत्रु ने कहा था, मैं पीछा करूंगा, मैं जा पकडूंगा, मैं लूट के माल को बांट लूंगा, उन से मेरा जी भर जाएगा। मैं अपनी तलवार खींचते ही अपने हाथ से उन को नाश कर डालूंगा॥ तू ने अपने श्वास का पवन चलाया, तब समुद्र ने उन को ढांप लिया; वे महाजलराशि में सीसे की नाईं डूब गए॥

आगे भी इसमें लिखा हुआ है, परंतु हमें वह तस्वीर स्पष्ट दिखाई देती है, जिसमें परमेश्वर अपने शत्रुओं का नाश करने समुद्र का उपयोग करता है। यह भाषा कहती है : "**फिरौन के रथों और सेना को उसने समुद्र में डाल दिया; और उसके उत्तम से उत्तम रथी लाल समुद्र में डूब गए**" यहाँ उन्हें समुद्र में डाल देने और पानी के इकठ्ठा होने, और सीधा यकायक ठहर जाना और समुद्र के बिचोबीच गहराई जमना इत्यादि की चर्चा है। यह सारे कथन परमेश्वर के क्रोध और पापीयों पर परमेश्वर के भयंकर क्रोध से संबंधित है। हम बाईबल में अन्य कई पदों में जाकर देख सकते है कि कैसे उनका आपस में संबंध है। उदाहरण के लिए, नूह के दिनों के जलप्रलय का ही विचार करे। परमेश्वर ने जहाँ मिस्रियों को डुबाया उस अर्थ से यह ''समुद्र'' नही था, परंतु एक तरह से वह ''समुद्र'' बन गया, क्योंकि परमेश्वर ने चालीस दिन और चालीस रातें उनपर वर्षा भेजी और उसनें गहरे जलों को खोल दिया। पृथ्वी पर भयंकर मात्रा में पानी की बाढ आई और पूरा संसार समुद्र में तब्दिल हो गया। उद्धार न पाए हुए लोग कैसे मरे? जलप्रलय के कारण वें डूब के मर गए, बिल्कुल वैसे ही जैसे मिस्री लाल समुद्र में डूबकर मरे, क्योंकि यह परमेश्वर के क्रोध को दर्शाता है।

परमेश्वर योना की किताब में कैसे समुद्र का वर्णन करता है, उसे याद करे। योना इस किताब में विभिन्न प्रतिको का प्रदर्शन करता है, परंतु अध्याय एक में वह प्रभु यीशु मसीह की तस्वीर है। योना के पहले अध्याय में योना परमेश्वर की उपस्थिती से तार्शिश भागने के लिए नाव में बैठता है। योना 1:3 में लिखा है :

परन्तु योना यहोवा के सम्मुख से तर्शीश को भाग जाने के लिये उठा, और यापो नगर को जा कर तर्शीश जाने वाला एक जहाज पाया; और भाड़ा देकर उस पर चढ़ गया कि उनके साथ हो कर यहोवा के सम्मुख से तर्शीश को चला जाए॥

यह भाषा संकेत दे रही है कि मसीह मानवजाति में प्रवेश करता है और मानवजाति परमेश्वर की उपस्थिती से दूर जा रही थी। यहाँ की शब्द रचना हमें एदेन की वाटीका में ले जाती है, जहाँ पर आदम और हव्वा ने पाप किया और वें **यहोवा के सम्मुख से** छिप गए। और तब से मानवजाति की यही अवस्था रही है। इस प्रकार योना जहाज में बैठता है, और परमेश्वर की उपस्थिती से भागकर उनके साथ हो लेता है, उसका अर्थ है, यीशु मनुष्य बना और मानवजाति में प्रवेश किया।

बाद में इस किताब में परमेश्वर समुद्र में तुफान भेजता है। योना के लिए उसकी कोई और योजना है। उसे तार्शिश नही जाना था, बल्की निनवे जाना था। इसे पूरा करने के लिए, परमेश्वर ने समुद्र में एक प्रचण्ड आंधी चलाई। तब मल्लाहों ने योना 1:11–16 में योना से कहा :

तब उन्होंने उस से पूछा, हम तेरे साथ क्या करें जिस से समुद्र शान्त हो जाए? उस समय समुद्र की लहरें बढ़ती ही जाती थीं। उसने उन से कहा, मुझे उठा कर समुद्र में फेंक दो; तब समुद्र शान्त पड़ जाएगा; क्योंकि मैं जानता हूं, कि यह भारी आंधी तुम्हारे ऊपर मेरे ही कारण आई है। तौभी वे बड़े यत्न से खेते रहे कि उसको किनारे पर लगाएं, परन्तु पहुंच न सके, क्योंकि समुद्र की लहरें उनके विरुद्ध बढ़ती ही जाती थीं। तब उन्होंने यहोवा को पुकार कर कहा, हे यहोवा हम बिनती करते हैं, कि इस पुरूष के प्राण की सन्ती हमारा नाश न हो, और न हमें निर्दोष की हत्या का दोषी ठहरा; क्योंकि हे यहोवा, जो कुछ तेरी इच्छा थी वही तू ने किया है। तब उन्होंने योना को उठा कर समुद्र में फेंक दिया; और समुद्र की भयानक लहरें थम गईं। तब उन मनुष्यों ने यहोवा का बहुत ही भय माना, और उसको भेंट चढ़ाई और मन्नतें मानीं॥

समुद्र उग्र रूप धारण कर रहा था। यह मानो ऐसा था कि परमेश्वर की व्यवस्था संतुष्टी की मांग कर रही थी। ध्यान दे, मल्लाहों ने कहा : ''इस पुरूष के प्राण के बदले हमारा नाश न हो।'' निःसंदेह, वे जो कह रहे थे, उसका पूरा महत्व उन्हें समझ में नही आया, परंतु यह मसीह के प्रायश्चित के कार्य की एक नाटकिय तस्वीर है, जो अपने लोगों के लिए मरा, मसीह मरा ताकि उसके चुने हुआ का नाश न हो। और मसीह ने जगत की उत्पत्ती से जो किया, उस कारण चुने हुओं का नाश नही होता।

जहाँ वे मनुष्य थे, वहाँ समुद्र ने उनके जहाज के प्रति अपना उग्र रूप शांत किया, क्योंकि योना को समुद्र में डाल देने के बाद मल्लाह लोगो से समुद्र का कोई सरोकार नही रहा। यही आत्मिक चित्र है क्योंकि योना मसीह का प्रतिक है। ''समुद्र'' परमेश्वर के क्रोध की ओर संकेत करता है क्योंकि उसने योना को ले लिया। ऐतिहासीक रूप से योना मसीह की

तस्वीर पेश करता है, जो पापों के लिए दाम चुकाता है, और यह ऐसा है कि मानो ''समुद्र'' अपने क्रोध में मसीह को ले लेता है।

फिर हम योना 2:1–3 में पढते है :

तब योना ने उसके पेट में से अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर के कहा, मैं ने संकट में पड़े हुए यहोवा की दोहाई दी, और उसने मेरी सुन ली है; अधोलोक के उदर में से मैं चिल्ला उठा, और तू ने मेरी सुन ली। तू ने मुझे गहिरे सागर में समुद्र की थाह तक डाल दिया; और मैं धाराओं के बीच में पड़ा था, तेरी भड़काई हुई सब तरंग और लहरें मेरे ऊपर से बह गईं।

जब हम इस भाषा की ओर गहराई से गौर करते है, तब हम पाते है कि ''अधोलोक के उदर'' का संबंध ''समुद्र की थाह'' से है, और उन ''धाराओं'' से है जिनके वह बीच में था और उन लहरों से है जो उसके उपर से बह गई। फिर आगे योना 2:4–6 में लिखा है :

तब मैं ने कहा, मैं तेरे साम्हने से निकाल दिया गया हूं; तौभी तेरे पवित्र मन्दिर की ओर फिर ताकूंगा। मैं जल से यहां तक घिरा हुआ था कि मेरे प्राण निकले जाते थे; गहिरा सागर मेरे चारों ओर था, और मेरे सिर में सिवार लिपटा हुआ था। मैं पहाड़ों की जड़ तक पहुंच गया था; मैं सदा के लिये भूमि में बन्द हो गया था; तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू ने मेरे प्राणों को गड़हे में से उठाया है।

हम यहाँ वही चित्र देखते है जिसमें मिस्रीयों को समुद्र में डाला जाता है या उस पहले संसार में डाला जाता है, जिसका जलप्रलय में विनाश हुआ। यहाँ, योना को, जो मसीह का प्रतिक है, समुद्र में डाला जाता है, और उसे एक मत्स्य ने निगल लिया, ताकि उसे बचाया जा सके, क्योंकि ऐतिहासीक रूप से, परमेश्वर के पास योना के लिए बहुत काम था। निनवे जाने के लिए उसे जीवीत रहना अवश्य था। वह मत्स्य समुद्र में है और वह उन धाराओं से घिरा हुआ है और जब वह योना को निगल लेता है, तब परमेश्वर कैसे समुद्र का प्रदर्शन करता है, यह उसकी तस्वीर है। परंतु प्रभु यीशु ने मृत्यु और नरक पर विजय पाई है, और वह उस गहराई से जी उठा, और पुनरूत्थीत हुआ। इस प्रकार मत्स्य का उद्देश्य पूरा हुआ और उसने सुखी भुमी पर योना को उगल दिया, यह प्रभु यीशु मसीह और जगत की उत्पत्ती से उसके लोगों के निमित्त उसके प्रायश्चित के कार्य की एक सुंदर तस्वीर है।

हम नए नियम में भी एक शब्द पाते है जो ''गहराइ'' के लिए उपयोग हुआ है, उसका संबंध सुअरों से है जो झील में डूब जाती है। लुका 8:30–33 में लिखा है :

यीशु ने उस से पूछा; तेरा क्या नाम है? उसने कहा, सेना; क्योंकि बहुत दुष्टात्माएं उसमें पैठ गईं थीं। और उन्होंने उस से बिनती की, कि हमें अथाह गड़हे में जाने की आज्ञा न दे। वहां पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था, सो उन्होंने उस से बिनती की, कि हमें उन में पैठने दे, सो उस ने उन्हें जाने दिया। तब दुष्टात्माएं उस मनुष्य से निकल कर सूअरों में गईं और वह झुण्ड कड़ाडे पर से झपटकर झील में जा गिरा और डूब मरा।

वे झील में डूब गई। झील में डूब जाना यह "गहराई" का संदर्भ है और "गहराई" यह शब्द उसी ग्रिक शब्द का अनुवाद है जिसका प्रकाशित वाक्य की पुस्तक में अथाह–कुंड किया गया है। इस प्रकार हम उस संम्बंध को देख सकते है, जो परमेश्वर सुंवरों के झुंड का झील में डूब जाना और मिस्रियों के लाल समुद्र में डूब जाने के बीच कर रहे है या वें लोंग जो नूह के दिनों में जलप्रलय में डूब गए या योना को समुद्र में डाल दिए जाने के बीच है। परमेश्वर कैसे इस प्रकार की भाषा का उपयोग करते है, यह हम देख सकते है।

एक और बात जिसका उल्लेख मैं योना की मृत्यु और उन मल्लाहों के संदर्भ में करना चाहता हूँ, जिन्होंने कहा **हे यहोवा हम बिनती करते हैं, कि इस पुरूष के प्राण की सन्ती हमारा नाश न हो**। याद करें कि मिका 7:18–20 में परमेश्वर ने क्या कहा :

तेरे समान ऐसा परमेश्वर कहां है जो अधर्म को क्षमा करे और अपने निज भाग के बचे हुओं के अपराध को ढांप दे? वह अपने क्रोध को सदा बनाए नहीं रहता, क्योंकि वह करूणा से प्रीति रखता है। वह फिर हम पर दया करेगा, और हमारे अधर्म के कामों को लताड़ डालेगा। तू उनके सब पापों को गहिरे समुद्र में डाल देगा। तू याकूब के विषय में वह सच्चई, और इब्राहीम के विषय में वह करूणा पूरी करेगा, जिस की शपथ तू प्राचीनकाल के दिनों से ले कर अब तक हमारे पितरों से खाता आया है॥

यहाँ पर परमेश्वर उसी अर्थ में यह कथन कर रहा है कि वह उनके पापों को समुद्र की गहराई में डाल देगा, जिस अर्थ में मसीह समुद्र में या गहराई में गया, क्योंकि उसने अपने लोगों के लिए नरक को सहा। नरक कब्र की ओर संकेत करता है। यीशु फिर से जीवीत होकर उठा। और जब मसीह एक बार समुद्र से उठता है, तब उसके चुने हुओं के पाप कहा है? वे समुद्र में ही रह जाते है। उनका दाम चुका दिया गया है, और परमेश्वर का क्रोध, समुद्र जिसका प्रतिक है, उसे अपने लोगो की ओर से उनके पापों के लिए प्रभु यीशु मसीह के द्वारा संतुष्ट किया गया। दाम पूरा चुकाया गया था और फिर यीशू फिर जी उठा और उन सभी पापों का दाम चुकाया गया जो उसने अपने लोगों के खातिर उठाए थें और अब उसके लोगों पर कोई पाप नही है। उनके पाप समुद्र की गहराई में है और इसलिए अब हम पाप से मुक्त है और परमेश्वर की दृष्टी में हम में कोई पाप नही हैः "**सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।**" हम शुद्ध है और हम बर्फ की तरह शुभ्रता से

धोए हुए है। हम शद्ध है और हममें अब कोई अधर्म, व्यवस्था का उल्लंघन या बुराई नही है। यदि हममें एक भी बुराई होती, तो परमेश्वर ने हमें नाश किया होता, परंतु हम उसकी दृष्टी में पूर्ण धर्मी, शुद्ध और पवित्र है क्योंकि हमारे पाप समुद्र में डाल दिए गए। समुद्र मृत्युका, नरक का और परमेश्वर के क्रोध का प्रतिक है।

परमेश्वर प्रकाशित वाक्य 21 पद 1 में एक खास बात कहते है, इसमें कोई आश्र्चय नही, वें कहते है "और समुद्र भी न रहा।" परमेश्वर यहाँ जिस दिशा में देख रहे है (और जिस दिशा में वह चाहता है कि हम देखें) वह अनन्तकालीन भविष्य है। अब इस संसार की ओर और इस सृष्टी की ओर देखना नही है क्योंकि वें टल जाते है और उसने नया आकाश और नई पृथ्वी की रचना की है। परमेश्वर के लोगो के पाप मिट चुके है। वें समुद्र में है क्योंकि मसीह ने जगत की उत्पत्ती से उनका दाम चुकाया और अब मृत्यु, नरक और परमेश्वर का क्रोध न रहा, क्योंकि परमेश्वर ने व्यवस्था की मांग को पूरा किया। उसके न्याय का उद्धेश्य पूरा हो चुका है और उसका पलटा लिया जा चुका है और अब यह नए आकाश और नई पृथ्वी का समय है ताकि वह अपने लोगों के साथ इस महिमामय नई सृष्टी में सदा सदा के लिए डेरा करें।

Revelation 21 Series, Study #3 by Chris McCann, originally aired , May 26, 2015

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन – 3, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 26 मई 2015

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 3 है और हम प्रकाशित वाक्य 21:2–3 पढेंगे :

फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो। फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा।

मैं यहाँ पर पढ़ना बंद करूंगा। हम इस समय पद 2 देख रहा हूँ। यह प्रकाशित वाक्य की पुस्तक का वह मुद्दा है जहाँ पर परमेश्वर अपने संपूर्ण उद्धार के सुसमाचार के कार्यक्रम का चरमोत्कर्ष दिखाता है। बाईबल का संपूर्ण इतिहास इस संसार के मिट जाने और नए आकाश और नई पृथ्वी की सृष्टी किए जाने, और मानवजाति की 'बुरी पीढ़ी' अर्थात संसार की उद्धार न पाए हुई मानवजाति के मिट जाने, प्रभु यीशु मसीह के प्रायश्चित के कार्य के द्वारा छुड़ाए गए और पवित्र किए गए चुने हुए लोगों के प्रति सारी प्रतिज्ञाओं के छुटकारे

के क्षण की ओर आगे बढ़ रहा है। बाईबल ने हमें इन दो बातों के विषय में बताया है। परमेश्वर ने हमें उसके चुने हुओं के उद्धार की उसकी योजना एवं दुष्ट और वर्तमान श्रापित सृष्टि को नाश करने और नए आकाश और नई पृथ्वी को बनाने के उद्देश्य के विषय में बताया है।

हम बाईबल की अंतिम पुस्तक में हैं, और इस पुस्तक के और बाईबल के अंत की ओर बढ़ रहे हैं और यह उचित और योग्य है कि सारी बातों के अंत एवं जो अंतिम कार्यवाही वह करेगा, उसके विषय में चर्चा करें, उस अंतिम कार्यवाही में नए आकाश और नई पृथ्वी की उत्पत्ति शामिल होगी।

प्रकाशित वाक्य 21:2 में लिखा है :

फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो।

पद 1 में यूहन्ना को नए आकाश और नई पृथ्वी का, या नई सृष्टि का दर्शन दिया गया था और पद 2 हमारा ध्यान, नई सृष्टी की ओर आकर्षित करता है, जो इस सृष्टि में निवास करते हैं। परमेश्वर ने जिन लोगों को बचाया है उनकी तुलना "पवित्र नगर, नए यरूशलेम" से की है। वह *"अपने पति के लिए सजी हुई दुल्हन"* का उल्लेख भी करता है। ये दोनों वाक्य उन लोगों का उल्लेख करते हैं जिन्हें जगत की उत्पत्ति से पहले उद्धार के लिए ठहराया गया था। वे सब, वे लोग हैं जिनके लिए यीशु मर गया और उसने उनकी ओर से पापों का दण्ड सहा; ये वे सब हैं जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखें गए हैं। परमेश्वर "पवित्र नगर" या "नए यरूशलेम" का उल्लेख करता है, और हम सोचते हैं कि वह एक स्थान है और लोग नहीं, परंतु जब हम उन शब्दों को देखते हैं जिनका परमेश्वर उपयोग कर रहा है, तो हम पाएंगे कि ये परमेश्वर के लोग हैं जो वास्तव में दृष्टीक्षेप में हैं।

हम पहले "पवित्र नगर" इस शब्द को देखेंगे। परमेश्वर कहता है कि यूहन्ना ने "पवित्र नगर, नए यरूशलेम" को देखा। कौन सी बात किसी को पवित्र बनाती है? बाईबल पुराने नियम में और नए नियम में कई बार "पवित्र" शब्द का उपयोग करता है, परंतु परमेश्वर उस शब्द का उपयोग क्यों करता है? स्वयं बाईबल को "पवित्र बाईबल" क्यों कहा गया है? सबसे पहले, जब हम "पवित्रता" के विषय में सोचते हैं, तब हमें स्वयं परमेश्वर के विषय में सोचना पड़ता है। 1 पतरस 1:15–16 में लिखा है :

पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं।

परमेश्वर पवित्र है। यह परमेश्वर का गुण या विशेषता है। यह एक सत्य है कि परमेश्वर पवित्र है और पवित्र होने का अर्थ वह शुद्ध है या उसकी समानता इस बात से होती है जो शुद्ध और अलग किया गया है, आदि। परमेश्वर पापरहित है। परमेश्वर पवित्रता में सिद्ध है, और इसलिए वह अपने लोगों को आज्ञा देता है, *"तुम भी पवित्र बनो।"* निःसंदेह, जब तक परमेश्वर हममें काम करके हममें नया हृदय उत्पन्न नहीं करता, तब तक हममें से कोई भी पवित्र नहीं बन सकता और उस नए हृदय की विशेषता है पवित्रता। यह पाप के बगैर है जैसे परमेश्वर पापरहित है। और इसी रीति से परमेश्वर के लोग अन्दर से पवित्र बनने की उस आज्ञा का पालन कर सकते हैं। हम इस संसार में परमेश्वर की इच्छा पूरी करने हेतु और पवित्रता का अनुसरण करने वाला जीवन बिताने के लिए पाप से दूर होकर इस संसार में परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने का प्रयत्न करते हैं।

परमेश्वर पवित्र है। हम रोमियों के 7वें अध्याय में एक अच्छा वचन पढ़ते हैं, जो हमें बताता है कि बाईबल को पवित्र बाईबल क्यों कहा गया है। रोमियों 7:12 में लिखा है :

इसलिये व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी ठीक और अच्छी है।

व्यवस्था और आज्ञा पवित्र है और इसमें पूरी बाईबल शामिल है क्योंकि बाईबल व्यवस्था की पुस्तक है। यह परमेश्वर की आज्ञाओं से परिपूर्ण है और आज्ञा पवित्र है – यह शुद्ध, योग्य और उत्तम है। परमेश्वर आपको और मुझको हमारे पड़ोसियों से प्रेम करने की, पतियों को पत्नियों से प्रेम करने की या पत्नियों को अपने पति की अधीनता में रहने की या बच्चों को अपने माता पिता का आदर करने की आदि आज्ञा देता है, इसमें गलत कुछ नहीं है (संपूर्ण मानवजाति उसके स्वरूप में सृजी गई है)। बाईबल में, परमेश्वर अपनी आज्ञाओं के साथ आगे बढ़ता जाता है। वह हमें आज्ञा देता है कि हम रविवार को सब्त के रूप में पवित्र माने। उसके पवित्र दिन, जो करने की वह आज्ञा देता है, वह हमें करना है। रविवार उसका पवित्र दिन क्यों है? इसका कारण यह है कि परमेश्वर ने नए नियम में उस दिन को चुना है ताकि मसीह के पुनरुत्थान पर जोर दें और उसने पुराने नियम के शनिवार के सब्त को बदलकर सप्ताह के पहले दिन (रविवार) को सब्त ठहराया है। इस दिन को परमेश्वर ने सुसमाचार सुनाने, प्रार्थना करने आदि जैसी आत्मिक गतिविधियों के लिए अलग रखने का निर्णय लिया। परमेश्वर ने रविवार को "पवित्र" ठहराया और मनुष्य उसकी उपेक्षा करता है और अन्य दिनों के समान उसके साथ व्यवहार करता है क्योंकि यह (उद्धार न पाए हुए) मनुष्य का स्वभाव है। जो पवित्र है, मनुष्य उसे लेकर सामान्य या अशुद्ध और अपवित्र बना देता है। मनुष्य परमेश्वर की सभी आज्ञाओं के साथ ऐसा ही करता है। जब परमेश्वर कहता है, *"तू व्यभिचार न करना,"* वह व्यवस्था भली और धर्मी है। मनुष्य को आज्ञा मानना ही है, क्योंकि परमेश्वर कहता है, *"जैसा मैं पवित्र हूं, वैसे ही तुम भी पवित्र बनो।"* किसी भी स्तर की पवित्रता हासिल करने के लिए आपको उसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए।

यदि आप पवित्र आज्ञा का उल्लंघन करते हैं और उसका पालन नहीं करते, तो आप अपवित्र और अधर्मी जीवन बिताते हैं। आप पापी के रूप में जीवन बिता रहे हैं और पापी पवित्र मार्ग पर नहीं चलते। इसीलिए वे "पवित्र" शब्द का उपहास करते हैं। "पवित्र" शब्द यहाँ वहाँ उछाला जाता है। जो कोई बाईबल पढ़ता है और प्रार्थना करता है और परमेश्वर के विषय में बोलता है, उसे "पवित्रता का दिखावा करने वाला" कहा जाता है। वे "पवित्र" शब्द का उपयोग इस प्रकार करते हैं मानो यदि कोई पवित्र बनने की कोशिश कर रहा है, तो वह बुरा है, फिर भी, परमेश्वर आज्ञा देता है, "तुम पवित्र बनो।" यह विश्वासी का जीवन है। जब बाईबल कहती है, "तुम्हारा प्रकाश लोगों के सामने ऐसा चमके," तब परमेश्वर मूल रूप से कह रहा है कि हमें अपने आचरण, व्यवहार और बातचीत में पवित्र बनना है। दूसरे शब्दों में, हमें आज्ञाओं का पालन करना है क्योंकि वे पवित्र है। जब आप परमेश्वर की व्यवस्था का अनुसरण करते हैं और जब आप परमेश्वर के अनुग्रह से योग्य होते हैं कि आप परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करें, तो आप कुछ अंश तक पवित्र जीवन बिताएंगे। और यह पवित्रता इस बुरे, बुरे, वह संसार जिसमें कुछ भी पवित्र नहीं है, संसार के अनुसार, स्पष्ट दिखाई देगी। संसार पवित्रता के विषय में कुछ नहीं जानता। यह परमेश्वर ठहराता है और परमेश्वर अलग करता है, जो कि सचमुच पवित्र है और उसके वचन, बाईबल को उचित ही "पवित्र बाईबल" कहा गया है। वह पवित्र पुस्तक है और परमेश्वर का पवित्र वचन है। क्या यह पुस्तक इस संसार में अन्य लिखाणों के मध्य अलग नहीं दिखाई देती? क्यों? क्योंकि बाईबल एकमात्र पवित्र किताब है। यह पवित्र परमेश्वर की ओर से आती है, वह स्वयं उसका पवित्र वचन है।

बाईबल बहुत समय पहले इस्राएल में पाई गई। यहूदी लोग परमेश्वर के वचनों के, जो कि परमेश्वर का वचन बाईबल है, भंडारी थे, और इसी ने प्राचीन इस्राएल को ''पवित्र स्थान'' बनाया और यरूशलेम के मंदिर को "पवित्र मंदिर" बनाया, क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिति मंदिर में थी और उसका वचन वहाँ था। इसलिए ऐतिहासिक दृष्टि से, इस्राएल 'पवित्र नगर' के रूप में विख्यात हो गया। वास्तविक यरूशलेम नगर एक समय 'पवित्र नगर' था, परंतु जब यीशु क्रूस पर चढ़ गया और मंदिर का पर्दा 'दो हिस्सों' में फट गया, तब परमेश्वर ने यह प्रगट किया कि उसकी उपस्थिति अब उस मंदिर में वास नहीं करती। अब वह 'पवित्र मंदिर' नहीं रहा और यदि मंदिर अब पवित्र नहीं है, तब यरूशलेम नगर 'पवित्र नगर' नहीं है और इस्राएल देश और यहूदा अब 'पवित्र भूमि' नहीं हैं। इसलिए मध्य पूर्व के देश को 'पवित्र भूमि' या यरूशलेम को 'पवित्र नगर' कहना यह कलीसियाओं की और किसी की भी यह कहना भूल है। यह अब पवित्र नहीं है। परमेश्वर ने उसके साथ संगती के कारण उन बातों को पवित्र बनाया और हम कह सकते हैं कि परमेश्वर ने मंदिर से और यरूशलेम से और यहूदियों से जाकर उन्हें संसारिकता दी। यहूदी लोग अब परमेश्वर के ''पवित्र प्रजा'' नहीं हैं। यह उस समय हुआ जब मंदिर का पर्दा फट गया। उस समय परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र को त्याग दिया और अब वे संसार के राष्ट्रों के लिए परमेश्वर के प्रतिनिधि नहीं हैं। उनके साथ जो निकटता थी उसे उसने त्याग दिया और वह

कलीसियाओं और मंडलियों के माध्यम से जगत को सुसमाचार सुनाने लगा। सामुहिक कलीसिया उस समय परमेश्वर के वचन की भंडारी बन गई। यदि आप कलीसियाई युग के दौरान कलीसिया में जाते थे, तो आप उस कलीसिया में 'पवित्र बाईबल' पाएंगे, और इसीलिए कलीसियाओं को 'पवित्र स्थान' के रूप में पहचाना जाने लगा। परमेश्वर मत्ती 24 में, महाक्लेश से संबंधित अध्याय में इस बात का उल्लेख करता है, जो कलीसियाओं पर न्याय का समय था। मत्ती 24:15 में वह कहता है :

सो जब तुम उस उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को जिस की चर्चा दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो, (जो पढ़े, वह समझे)।

जब मंदिर का पर्दा फट गया और मंदिर और इस्राएल के साथ अपना रिश्ता परमेश्वर ने समाप्त किया, तब क्रूस पर वास्तव में क्या हुआ इसे जब हम सही रीति से समझते हैं, तब हम यह भी समझते हैं कि यही बात सामुहिक कलीसियाओं के साथ हुई। यहाँ पर यीशु अपने शिष्यों के प्रश्न का उत्तर दे रहा है, *"आपके आने, और जगत के अंत का क्या चिन्ह होगा?"* हम समझते हैं कि *"उस उजाडने वाली घृणित वस्तु को जिसकी चर्चा दाय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्र स्थान में खड़ा देखोगे"* का हमारे दिन में अंत के समय में उपयोग है और परमेश्वर किसी भी रीति से शाब्दिक इस्राएल, वास्तविक मंडली या शाब्दिक यरूशलेम नगर के विषय में बातें नहीं करता। यह संभव नहीं है कि यह किसी रीति से उनका उल्लेख करे क्योंकि वे लगभग 2000 वर्षों तक पवित्र लोग या पवित्र स्थान नहीं थे, केवल दूसरा 'पवित्र स्थान' था जो अंत के समय अस्तित्व में होगा और यह सामुहिक कलीसिया है। परमेश्वर 'यहूदिया' या 'इस्राएल' का या 'मंदिर' शब्द का अलंकारिक उपयोग कलीसिया और मंडलियों को लागू करने के लिए करता है और जो उनमें वास करते हैं, उनकी तुलना यहूदियों से करता है। दृष्टांत की भाषा में, यीशु समझाता है कि जब आप घृणित वस्तु (शैतान) 'पवित्र स्थान में खड़ा पाओगे,' तो यह कलीसियाओं का उल्लेख करता है।

ध्यान दें कि यीशु कहता है, *"जो पढ़े वह समझे।"* दूसरे शब्दों में, जो कुछ वह कह रहा है उसे शब्दशः कहने का प्रयास न करें अन्यथा आप सत्य से लाखों मील दूर हो जाएंगे। क्योंकि यदि परमेश्वर आपके कान खोलता है और यदि यह अंत का समय है (क्योंकि ये बातें अंत समय के लिए मुहर लगाकर बंद कर दी गई थी) और परमेश्वर ज्ञान बढ़ाने के लिए पवित्र शास्त्र को खोलता है, तब जो कुछ उसने कहा उसे समझने की हम अपेक्षा कर सकते हैं। और हम उसे वचन–ब–वचन समझते हैं और स्पष्ट रूप से देख सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर ने ये बातें अपने लोगों पर प्रगट की हैं।

फिर से, इस वचन में 'पवित्र स्थान' कलीसिया की ओर संकेत करता है। प्रकाशित वाक्य 11 में, परमेश्वर कलीसियाओं पर आ चुके महाक्लेश और न्याय के विषय में चर्चा करता है। ध्यान दें कि वह सत्य को छिपाने के लिए पुराने नियम की भाषा का उपयोग करता है।

उचित समय तक उसने इन बातों को छिपाने के लिए दृष्टांतों में बातें की। हम प्रकाशित वाक्य 11:1–2 में पढ़ते हैं :

और मुझे लग्गी के समान एक सरकंडा दिया गया, और किसी ने कहा; उठ, परमेश्वर के मन्दिर और वेदी, और उस में भजन करने वालों को नाप ले। और मन्दिर के बाहर का आंगन छोड़ दे; उस मत नाप, क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया गया है, और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौंदेंगी।

और फिर से, जब परमेश्वर 'मंदिर' और 'बाहरी आंगन' और 'पवित्र नगर' के पांवों तले रौंदे जाने की भाषा बोलता है, तब कोई संभावना नहीं है कि कलीसिया को इस प्रकार के वचनों से सत्य पाने का कोई अवसर नहीं है (कलीसियाओं को शैतान के अधीन कर दिया गया है और उन्होंने इस प्रकार के बाईबल आधारीत व्याख्याविज्ञान का आविश्कार किया है जिसमें शास्त्रलेखों के केवल सीधें और शाब्दिक अर्थ को देखा जाता है)। वे इस बात की उपेक्षा करते हैं कि मसीह ने दृष्टांतों में बातें की और वे कई वचनों को नजरअंदाज करते हैं जिनमें परमेश्वर स्पष्ट करता है कि बाईबल को किस प्रकार समझा जाना चाहिए। इस प्रकार के व्याख्याविज्ञान का उपयोग कर, उनके पास बाईबल को समझने का कोई अवसर नहीं बचता। उनकी व्याख्या लोगों को सत्य से दूर ले जाती है।

हम समझते हैं कि यहाँ प्रकाशित वाक्य 11 में उल्लेख किया गया 'पवित्र नगर' और 'मंदिर' सामुहिक कलीसिया है। परंतु 'मंदिर' या 'पवित्र नगर' चुने हुए का भी उल्लेख करता है। यह 'कलीसिया' शब्द के समान है। जब यीशु नए नियम के कुछ वचनों में 'कलीसिया' की चर्चा करता है, तब उसकी आंखों के सामने सामुहिक कलीसिया थी जिसमें गेहूं और जंगली बीज दोनों थे, परंतु अन्य स्थानों में जब वह 'कलीसिया' के विषय में बोलता है, तब वह केवल सनातन कलीसिया के विषय में बोल रहा है, जो चुने हुओं से बनी है। उदाहरण के तौर पर, जब मसीह ने कहा कि नरक के फाटक कलीसिया के विरोध में प्रबल नहीं होंगे, तब वह केवल चुने हुओं का उल्लेख कर रहा था। इफिसियों की पत्री के 5 वें अध्याय में लिखा है कि पतियों को अपनी पत्नियों से वैसे ही प्रेम करना है, जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया, यहाँ परमेश्वर चुनी हुई सनातन कलीसिया का उल्लेख करता है।

उसी तरह, बाईबल में दो 'यरूशलेम' का उल्लेख किया गया है। कभी कभी लोग हमारी सुनते हैं और वे कलीसियाओं में रहते हैं और वे इन बातों को नहीं समझते क्योंकि उन्होंने उद्धार नहीं पाया है। वे 'अपनी आंखें घुमाते हैं' और कहते हैं, ''दो यरूशलेम। वह फिर से बातों को आत्मिक बना रहा है।'' परंतु बाईबल क्या कहती है? यहाँ पर आत्मिक स्वरूप देनेवाला मैं नहीं हूँ, और अब्राहम के दो पुत्रों के विषय में ये मेरे वचन नहीं हैं, एक तो दासी से था और एक स्वतंत्र स्त्री से था जिसके विषय में परमेश्वर गलातियों 4:24–25 में कहते है :

इन बातों में दृष्टान्त है, ये स्त्रियां मानों दो वाचाएं हैं, एक तो सीनै पहाड़ की जिस से दास ही उत्पन्न होते हैं; और वह हाजिरा है। और हाजिरा मानो अरब का सीनै पहाड़ है, और आधुनिक यरूशलेम उसके तुल्य है, क्योंकि वह अपने बालकों समेत दासत्व में है।

क्या आप यह सब कुछ समझ गए? 'उत्तर देता है' यह शब्द (अंग्रेजी बाईबल के अनुसार) को 'तुल्य' के रूप में बेहरत समझा जा सकता है, परंतु परमेश्वर कहता है कि दो वाचाएँ हैं। एक है सीनै पर्वत की 'हाजिरा' जो दासत्व का प्रतीक है। सबसे पहले, उसकी तुलना सीनै पर्वत से की गई है जहाँ पर व्यवस्था दी गई थी और वह यरूशलेम के तुल्य है, जो आज का यरूशलेम है। वाह, आत्मिकीकरण के विषय में बोलें। यह परमेश्वर है जो बोल रहा है और परमेश्वर उसे आत्मिकीकरण का रूप देता है और हमें सिखाता है कि हमें गहरे आत्मिक अर्थ के लिए उत्पत्ति की पुस्तक और संपूर्ण बाईबल को कैसे देखना है। उसके बाद वह गलातियों 4:26 में कहता है :

पर ऊपर की यरूशलेम स्वतंत्र है, और वह हमारी माता है।

यहाँ पर, वह उसकी तुलना सारा और यरूशलेम से करता है। वह दो यरूशलेम के विषय में बोलता है। यह मैंने नहीं कहा, परंतु परमेश्वर ने कहा। एक हाजिरा से समानता रखता है, जो व्यवस्था के समान है जो बंधुवाई में ले जाती है, और यरूशलेम के समतुल्य है जो अब है (संसार की कलीसिया)। दूसरी, ऊपर के यरूशलेम, स्वर्गीय यरूशलेम के समान है जो प्रकाशित वाक्य 21 में स्वर्ग से परमेश्वर की ओर से नीचे उतरती है। संपूर्ण इतिहास में 'स्वर्गीय यरूशलेम' है, जो ऊपर आकाश में मंडराता है, जब परमेश्वर ने अपने लोगों को बचाया और उन्हें जब 'मंदिर' या अपने 'पवित्र नगर' को बनाया, तब सारी पीढ़ियों में उन्हें उस 'पवित्र नगर' में जोड़ दिया। परंतु इस समय पृथ्वी पर संसारिक यरूशलेम और संसारिक कलीसिया थी।

यदि प्रभु की इच्छा रही, तो हम संसारिक 'पवित्र नगर', सामुहिक कलीसिया और स्वर्गीय 'पवित्र नगर' के बीच फर्क देखेंगे और देखेंगे कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ संबंध में 'पवित्र' शब्द का कैसे उपयोग करता है।

Revelation 21 Series, Study #4 by Chris McCann, originally aired , May 27, 2015

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 4, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 27 मई 2015

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 4 है और हम प्रकाशित वाक्य 21:2–3 पढेंगे :

फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो। फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा।

मैं यहाँ पढना रोक देता हूँ। हमारे पिछले अध्ययन में हमनें पद 2 की ओर और नए येरूशलेम की ''पवित्र नगर'' की भाषा की ओर देखा, साथ ही हमने देखा कि बाईबल हमें बताती है कि परमेश्वर पवित्र है। और क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, इसलिए वह अपनी प्रजा को आज्ञा देता है कि : ''**पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं।**''

हमने रोमियों 7:12 में भी देखा कि व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञाए पवित्र है, इस प्रकार परमेश्वर का वचन, अर्थात बाईबल पवित्र है। उसे उचित रूप में पवित्र बाईबल या पवित्र शास्त्र कहाँ जाता है। परमेश्वर पवित्र होने के परिणाम स्वरूप, और उसका वचन पवित्र होने के परिणाम स्वरूप, इसका अर्थ है कि, वे जो परमेश्वर के नाम से पहचाने जाते है, वे भी पवित्र है। इसलिए प्राचिन इस्राएल को पवित्र प्रजा के रूप में जाना जाता है और येरूशलेम नगर पवित्र नगर था, और मंदिर पवित्र स्थान था।

परमेश्वर ने नए नियम की कलीसियाओं और मंडलियों के साथ संबंध जोडने के लिए भी उन प्रतिकों का उपयोग किया। इसलिए मत्ती 24:15 में प्रभु उस महाक्लेश की चर्चा करते है जो समय के अंत में आता है (जब इस्राएल अब पवित्र देश नही रहा और न यहुदी पवित्र लोग रहे और न मंदिर अब पवित्र स्थान रहा)। और वह उस उजाडनेवाली घृणित वस्तु की चर्चा करता है, जो पवित्र स्थान में खडी हुई है, और तब वह आज्ञा देता है : ''तब जो यहुदियों में हो वें पहाडों पर भाग जाएँ।'' वह हमारे लिए एक सुराग होना चाहिए और हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि उस क्रूस के समय, जब मंदिर का पर्दा दो भाग में फट गया, तब इस्राएल परमेश्वर के पवित्र लोग नही रहे और न मंदिर पवित्र स्थान रहा। परंतु सन 33 में कलीसियाओं की स्थापना हुई और कलीसियाओं के लोगो के पास परमेश्वर का पवित्र वचन था। उनके पास परमेश्वर के मुख से निकला वचन था क्योंकि इस्राएल अब परमेश्वर के वचन के भंडारी नही थें। परमेश्वर ने अपने वचन की सुरक्षा और सुधी के लिए नए नियम की कलीसियाओं का आरंभ किया था, और मसीह ने इन मंडलियों में डेरा किया, और उन्हें पवित्र किया, जिस तरह पुराने नियम में परमेश्वर ने मंदिर में डेरा किया, और मंदिर और लोगों को पवित्र किया बिल्कुल वैसे ही। उसके बाद परमेश्वर के साथ और उसके वचन के साथ सहभागीता के माध्यम से कलीसियाए ''पवित्र स्थान'' बनी, नये नियम के युग के दौरान 1988 में चर्च युग के अन्त तक।

फिर परमेश्वर ने प्रकाशित वाक्य के अध्याय 11 में ''पवित्र नगर'' पैरों में कुचले जाने और पवित्र स्थान में घृणित वस्तु के होने की चर्चा की। वे शैतान को छोडे जाने के समय के कथनों से मिलते जुलते कथन है, जब वह कलीसियाओं में प्रवेश करेगा और पाप का पुरूष बनकर अपने सिंहासन पर बैठेगा। पवित्र आत्मा कलीसियाओं से बाहर आया। दानिएल की किताब में इस समय के विषय में उजाडनेवाली घृणित वस्तु के बैठने और सुसमाचार की ज्योंति, पवित्र आत्मा के दूर किये जाने के वर्णन के रूप में लिखा है। उसके तुरंत बाद कलीसियाए अब पवित्र स्थान न रही, बल्की उन्होंने परमेश्वर की उपस्थिती को खो दिया। परंतु परमेश्वर, पवित्र नगर की उस भाषा का उपयोग कर सकता है क्योंकि, वह शैतान के पैरों तले कुचले जाने तक अब भी पवित्र नगरी थी।

हम प्रकाशित वाक्य 21:2 में पढते है :

फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो।

यह पवित्र नगर परमेश्वर के चुने हुओं से बना है, और यह वही पवित्र नगर है जिस के विषय में हम मत्ती 27:50–51 में पढते है :

तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए। और देखो मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया: और धरती डोल गई और चटानें तड़क गईं।

मैने कई बार **मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया** का उल्लेख किया है। यह क्या संकेत करता है? याद करे, परमेश्वर के कहे अनुसार वह ''परम पवित्र'' स्थान था। वाचा का संदुक परम पवित्र स्थान में रखा जाता था, जो मंदिर में, येरूशलेम के नगर में और इस्राएल में परमेश्वर की उपस्थिती का प्रतिक है। पर परमेश्वर ने मंदिर का पडदा फाड डाला। यह मपुष्य ने नही, बल्की परमेश्वर ने इतिहास के इस बिंदू पर किया जब यीशू ने क्रूस पर अपना प्राण छोड दिया। इस्राएल को त्याग देना अंतिम रूप था, और वे पवित्र प्रजा न रहे, और न ही मंदिर पवित्र स्थान रहा, और परम पवित्र स्थान भी अब परम पवित्र स्थान न रहा, और यहुदी पवित्र प्रजा न रहे।

मत्ती 27:51–53 में आगे लिखा है :

और देखो मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया: और धरती डोल गई और चटानें तड़क गईं। और कब्रें खुल गईं; और सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत लोथें जी उठीं। और उसके जी उठने के बाद वे कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में गए, और बहुतों को दिखाई दिए।

निःसंदेह, सब लोग यह पढते ही अपने आप ऐतिहासीक येरूशलेम के नगर का विचार करते है। इसमें अर्थ दिखाई पडता है, क्योंकि मसीह को उसी नगर के बाहर क्रूस पर चढाया गया था और उस समय तक यह पवित्र नगर था। परंतु हम पढते है : ''**मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया**'' और तुरंत यह नगर पवित्र नगर के रूप में कहलाना बंद हुआ। ऐसा लिखा है कि : ''**सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत लोथें जी उठीं। और उसके जी उठने के बाद वे कब्रों में से निकलकर**'' यह क्रूस के पास नही हुआ, परंतु यह पुनरूत्थान के बाद उस रविवार को हुआ। जब ऐसा लिखा है कि वे जीवीत हुए और '' **पवित्र नगर में गए, और बहुतों को दिखाई दिए**'' हम जानते है कि यह भौतिक येरूशलेम के विषय में नही लिखा है, बल्की यह स्वर्गिय येरूशलेम के विषय में लिखा है, वह पवित्र नगर जो उपर स्वर्ग में है। इस येरूशलेम की स्थापना वहाँ हो रही थी जहाँ परमेश्वर स्वर्ग में रहता है, और जब परमेश्वर ने अपने लोगों का उद्धार किया, वे उस नगर के रहीवासी हो गए, और यही कारण है कि हम प्रकाशित वाक्य 21 में उसके विषय में पढते है कि वह (नगर) स्वर्ग से परमेश्वर के पास से ''निचे उतरकर'' आता है। उसका निर्माण किया जा रहा था। जगत की उत्पत्ती से प्रभु यीशू ने सारी तैयारीया कर ली थी और परमेश्वर ''समय के दौरान'' इसका और उसका उद्धार करने वाले थे, और उसका नगर बनाया जा रहा था। यह वही नगर है जिसके विषय में परमेश्वर इब्रानीयों 11:16 में चर्चा करते है :

पर वे एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं, इसी लिये परमेश्वर उन का परमेश्वर कहलाने में उन से नहीं लजाता, सो उस ने उन के लिये एक नगर तैयार किया है॥

यह वही नगर है जिसका उल्लेख इसके पहले इब्रानीयों 11:9–10 में किया गया :

विश्वास ही से उस ने प्रतिज्ञा किए हुए देश में जैसे पराए देश में परदेशी रह कर इसहाक और याकूब समेत जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बूओं में वास किया। क्योंकि वह उस स्थिर नेव वाले नगर की बाट जोहता था, जिस का रचने वाला और बनाने वाला परमेश्वर है।

यह वही स्वर्गीय येरूशलेम है जिसकी चर्चा गलतीयों के अध्याय 4 में है, क्योंकि परमेश्वर ने वहाँ अब्राहम की दो पत्नीयों और दो पुत्रों की चर्चा की जो उन दोनों पत्नीयों से उत्पन्न हुए। वहाँ हाजिरा थी जो ''अब जो है उस येरूशलेम'' की या इस पृथ्वी के येरूशलेम की प्रतिक है, और सारा स्वर्गीय येरूशलेम की प्रतिक है। परमेश्वर कहता है कि ये बातें अलंकारिक है, क्योंकि वह पृथ्वी की कुछ तस्वीरों का आत्मिक सत्य प्रकट करने परदा उठा रहा है : एक भौतिक येरूशलेम है और एक स्वर्गीय येरूशलेम है। इब्रानीयों 12:22–23 में लिखा है :

पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास। और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया जिन के नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं: और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं।

यहाँ स्वर्गीय येरूशलेम है। यह विश्वासीयों की महिमामय देह है, जो परमेश्वर द्वारा किए गए उद्धार के द्वारा जोडी गई है। परमेश्वर ने सब कार्य किया, उसने दुल्हन को सजाया और उसका उद्धार किया। उसने नगर बनाया "**जिस का रचने वाला और बनाने वाला परमेश्वर है।**'' उसने ''मसीह की दुल्हन'' को तैयार किया है। उसने नए येरूशलेम की सृष्टी की और इसकी नीवं उद्धार है।

हम यशायाह 52:1 में पढतें है :

हे सिय्योन, जाग, जाग! अपना बल धारण कर; हे पवित्र नगर यरूशलेम, अपने शोभायमान वस्त्र पहिन ले; क्योंकि तेरे बीच खतनारहित और अशुद्ध लोग फिर कभी प्रवेश न करने पाएंगे।

देखो, भौतिक येरूशलेम के विषय में जो समस्या है, वह यह कि इस नगर में उद्धार न पाए हुए लोग भी प्रवेश कर सकते है। इतिहास में उद्धार न पाए हुए कई लोग येरूशलेम में थे, फिर चाहे अच्छे राजाओं ने शासन किया हो या बुरे राजाओं ने। उद्धार न पाए हुए लोग हमेशा ही थे, और वास्तव में उद्धार न पाए हुए अधिक संख्या में थे। उसके बाद जब परमेश्वर ने कलीसियाई युग में येरूशलेम की तस्वीर के रूप में नए नियम की कलीसियाओं का उपयोग किया, तब वहाँ भी यही समस्या थी। वहाँ हमेशा ही गेहूँ और जंगली बीज के दाने थे, उद्धार पाए हुए और उद्धार न पाए हुए लोग थे, और जंगली बीज को बाहर रखने का कोई विकल्प नही था। परमेश्वर ने कटनी के समय तक उन्हें एक साथ रहने दिया, कही ऐसा न हो कि तुम जंगली बीज के साथ गेहूँ भी उखाड लो। इस तरह, भौतिक येरूशलेम में उद्धार न पाए हुऐ और उद्धार पाए हुए हमेशा ही साथ रहे।

परंतु स्वर्गीय येरूशलेम अलग है। उद्धार न पाए हुआ कोई भी मनुष्य वहाँ नही जा सकता। यह वह नगर है जो उस निंव पर रचा गया जो प्रभु यीशू मसीह है, यह परमेश्वर के प्रत्येक चुने हुओं के जीवीत पत्थर से बना हुआ नगर है, और परमेश्वर ने उन्हें ही एक साथ जोडकर इस सुंदर नगर को बनाया। यशायाह 65 में परमेश्वर नए आकाश और नई पृथ्वी की सृष्टी को येरूशलेम के साथ जोडते है। यशायाह 65:17–19 में लिखा है :

क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करने पर हूं, और पहिली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएंगी। इसलिये जो मैं उत्पन्न करने पर हूं, उसके कारण

तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मगन रहो; क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को मगन और उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊंगा। मैं आप यरूशलेम के कारण मगन, और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित हूंगा; उस में फिर रोने वा चिल्लाने का शब्द न सुनाई पड़ेगा।

परमेश्वर ने प्रकाशित वाक्य अध्याय 21 में यही बात की। वह नया आकाश और नई पृथ्वी की सृष्टी करता है और उसके बाद हम स्वर्ग से परमेश्वर के पास से नए येरूशलेम को निचे उतरने का वर्णन पढते है। क्या यह ऐसा कहता है कि येरूशलेम नई पृथ्वी है? नही, यह ऐसा नही कहता, परंतु परमेश्वर कहता है कि वह नया आकाश और नई पृथ्वी को बनाता है और नई पृथ्वी पर निवास करने के लिए ''नई प्रजा'' को बनाता है। वह इन दों विचारों को एकसाथ जोडता है। जिस तरह से वह नए जगत की सृष्टी करता है बिल्कुल वैसे ही वह उन सभी व्यक्तियों से ''नई सृष्टी'' बनाता है, और उसने सामूहिक रीति से नई जाति या नई प्रजा बनाई है, जो "दुसरे आदम" अर्थात प्रभु यीशू मसीह के स्वरूप में रचे गए है। अब वे पतित आदम की संन्तान नही है। वे सब जो उद्धार नही पाए थे, अपने पापों में मरे और नाश हुए : वह पृथ्वी जो भ्रष्ट और शापग्रस्त थी, नाश कर दी गई। जो आकाश इस भ्रष्ट पृथ्वी के कारण दुषित हो चुका था, अब नाश हो चुका है।

अब परमेश्वर नए आकाश, नई पृथ्वी और नई प्रजा को बनाता है। यह पूरी तरह से नई और अद्‌भुत सृष्टी है जो इस वर्तमान सृष्टी का स्थान लेती है, और ''सब बातें नई होती है'' पहले की बातें अब न याद आएगी और न ही मन में आएगी। हम इस पाप भ्रष्ट जगत की ओर किसी भी तरह से देखने के लिए एक पल भी जाया न करेंगें (यदि हम अनन्त काल में समय–संदर्भ का उपयोग कर सकते है) यदि हम देख सके तो हमें पाप को छोड क्या स्मरण आएगा? पाप के कारण सब कुछ प्रभावित, दुषित और भ्रष्ट हो चुका है, तो फिर पाप का स्मरण किये बिना हमें और कुछ कैसे याद रह सकता है? इसलिए अवश्य है कि उसे हमारी स्मृति से ही नष्ट किया जाए – वह सदा के लिए विलुप्त हो और नष्ट की जाए यह आवश्यक है। हमारी इस नई सृष्टी में परमेश्वर और उसकी प्रजा का ध्यान यही होगा कि बीती हुई बातों की ओर न देखें और हम अनन्त भविष्य में ''आगे की ओर देखेंगे, न की पीछे देखेंगे।''

हम हमारे संदर्भ पद की ओर आएँगें, यहाँ प्रकाशित वाक्य 21:2 में लिखा है :

फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो।

यहाँ जिस ग्रिक शब्द का अनुवाद ''सिंगार'' किया गया है, वह शब्द स्ट्रॉंग शब्द सूची में # 2090 है, और यह प्रकाशित वाक्य 19 वे अध्याय में भी इसी प्रकार के कथन में पाया जाता है। प्रकाशित वाक्य 19:7 में लिखा है :

आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उस की स्तुति करें; क्योंकि मेम्ने का ब्याह आ पहुंचा: और उस की पत्नी ने अपने आप को तैयार कर लिया है।

यहाँ ''तैयार कर लिया है'' यह शब्द वही ग्रिक शब्द है जिसका अनुवाद ''सिंगार'' किया गया है, इसलिए यह अनुवाद इस तरह होगा : ''अपने पति के लिए तैयार किए हो'', जैसा कि प्रकाशित वाक्य 21:2 में लिखा है : ''**.....जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो।**.''

आगे प्रकाशित वाक्य 19:8–9 में हम पढते है :

और उस को शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया, क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम हैं। और उस ने मुझ से कहा; यह लिख, कि धन्य वे हैं, जो मेम्ने के ब्याह के भोज में बुलाए गए हैं; फिर उस ने मुझ से कहा, ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं।

हमने इन दों पदो के अध्ययन में बहुत ज्यादा समय बिताया है और हमने देखा कि जब परमेश्वर ने अपने चुने हुए अंतिम व्यक्ति का उद्धार किया तब ''दुल्हन'' तैयार हुई, तब न्याय का दिन आया और स्वर्ग का द्वार बंद हो गया, आगे प्रकाशित वाक्य 19 न्याय के दिन का विस्त्रुत वर्णन करता है। वहाँ दुल्हन है और स्वर्ग की सेना है, जो श्वेत वस्त्र पहने हुए है, और प्रभु यीशू मसीह के पिछे चलते है। हमने देखा कि उद्धार के द्वारा दुल्हन ने स्वंय को तैयार किया। जैसे जैसे विश्वासीयों ने परमेश्वर का वचन उन लोगों तक पहुँचाया जो चुने हुए थे, और परमेश्वर ने उनका उद्धार करने अपने वचन को आशिषीत किया, वैसे वैसे वे उस दुल्हन में जोडे गए। इस प्रक्रिया को कहा जा सकता है कि ''दुल्हन ने स्वंय को तैयार किया'', क्योंकि दुल्हन को मसीह की एक देह के रूप में एक साथ लाने के लिए परमेश्वर ने अपने ही लोगों का उपयोग किया। ''शद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनाने'' यह भाषा ''संतों की धार्मिकता'' के रूप में परिभाषित की जा सकती है। यह मसीह की धार्मिकता है जिसे परमेश्वर उनकी धार्मिकता मानता है जिन्हें उसने बचाया।

यीशू ने उनके पापों का दाम चुकाया, और उसकी धार्मिकता उनकी धार्मिकता बन गई, इसलिए सब शुद्ध, पवित्र, और श्वेत है, यही परमेश्वर के सब लोगों का महिमामय ''दुल्हन'' का वस्त्र है।

फिर एक बार, चुने हुए मसीह की दुल्हन है और उन्हें उद्धार के द्वारा तैयार किया गया है, और प्रकाशित वाक्य 21 वे अध्याय में यही तस्वीर है, जहाँ लिखा है : ''**जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो।**'' दुल्हन का ''सिंगार'' उसका वस्त्र है, वह उद्धार जो परमेश्वर ने उसे पहनाया है, और उसके पति ने अर्थात मेम्नें ने, उसे उद्धार का सिंगार दिया है।

हम यशायाह के अध्याय 61 में एक दिलचस्प पद पातें है, वहाँ परमेश्वर दुल्हन और सिंगार की चर्चा करते है। यशायाह 61:10 में लिखा है :

मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊंगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए.....

यह पद बिल्कुल वही ''महीन मलमल'' को दर्शाता है। यह ''उद्धार के वस्त्र'' का प्रतिक है। आगे यशायाह 61:10 में लिखा है :

.....और धर्म की चद्दर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आप को सजाता और दुल्हिन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है।

परमेश्वर यहाँ जो सुंदर तस्वीर बना रहे है, क्या आप उसे देख सकते है? उद्धार ऐसा है जैसे एक दुल्हन अपने आप को आभुषणों से सजाती है ताकि वह अपने विवाह के दिन बहुत सुंदर दिखें। परमेश्वर की दृष्टी में ''मसीह की दुल्हन'' कैसे सुंदर बनती है? यह उसके शुद्ध वस्त्र, उसकी धार्मिकता ही है। यह उद्धार के वस्त्र है क्योंकि, परमेश्वर को कोई पाप नजर नही आता। वह उसकी दुल्हन को श्वेत वस्त्र पहिने हुए देखता है, और यह एक प्यारा चित्र है, क्योंकि उसके पाप मिट गए है, पुर्व जितनी पश्चिम से दूर है उसके पाप हटा दिए गए, उन्हें समुद्र की गहराई में डाल दिया गया, ताकि उनका अब स्मरण न हो। उसकी पुरी क्षमा हुई है : ''**सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं**'' यह सब भाष बाईबल में परमेश्वर के लोगों पर लागु की गई है, उन पर जिन्हें परमेश्वर ने उद्धार दिया है और यह परमेश्वर की भली इच्छा पर आधारित है, और उनके किसी भी काम के साथ इसका लेना देना नही है जो उन्होंने किया हो – यह कर्मों से या उनके गुणों के आधार पर नही है, और वे इस उद्धार के योग्य नही है। यह सब परमेश्वर के अनुग्रह से है जिस कारण दुल्हन अपने पति के निमित्त सही रिती से सिंगार किए है।

Revelation 21 Series, Study #5 by Chris McCann, originally aired , May 28, 2015

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 5, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 28 मई 2015

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 5 है और हम प्रकाशित वाक्य 21:3 पढेंगे :

फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा।

प्रेरित युहन्ना को एक दर्शन दिया गया है जिसमें वह स्वर्ग से बडी ध्वनी सुनता है : "**देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है;**" परमेश्वर ने यही बात बाईबल की अन्य शिक्षाओं में कही है। उसने भिन्न भिन्न तरीको से सिखाया कि उसकी प्रजा के साथ (वे जिनका उसने उद्धार किया) रहने की उसकी योजना है। जब उसने इस्राएलीयों के साथ जंगल में और उसके बाद उसने जब मंदिर का निर्माण करने के बाद डेरा किया तब उसने इसी बात को सिखाया, और यह सब परमेश्वर के आत्मिक घर की रचना की तस्वीर है जिसमें वह अनन्तकाल के लिए डेरा करेगा।

येरूशलेम का पवित्र नगर जो दुल्हन की नाई सिंगार किए निचे उतरता है उसके संबंध में प्रकाशित वाक्य 21 में प्रारंभिक कथनों के बाद, हम पढते है कि उसका ''डेरा'' मनुष्य के बीच है और वह उनके साथ रहेगा। हम इफिसियो 2:20–22 में पढते है :

और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो। जिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है। जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो॥

यहाँ परमेश्वर एक स्पष्ट कथन करता है, परंतु वह विश्वासीयों के विषय में चर्चा कर रहा है जो उसके चुने हुए है, और प्रभु यीशू मसीह उनकी नीव है। यीशू ''**कोने का पत्थर**'' है। वह नीव है। सनातन कलीसिया मसीह पर बनाई गई है और परमेश्वर उसे ''**प्रभु में एक पवित्र मन्दिर**'' कहता है। वह वही नगर है जिसके विषय में हमने पिछले अध्ययन में पढा "**जिस का रचने वाला और बनाने वाला परमेश्वर है।**'' परमेश्वर अपने उद्धार के कार्यक्रम के विषय में ऐसी भाषा का उपयोग करता है कि मानों वह एक नगर या मंदिर का निर्माण कर रहा हो, जैसे कि इफिसियो में कहाँ गया है। यह सब एक ही बात है। परमेश्वर अपने निवास स्थान के लिए और अपने डेरे के लिए मंदिर बनाता है। 1 कुरिंथियों के 3 रे अध्याय में हम प्रभु यीशू के विषय में भी पढतें है कि वह नींव है। 1 कुरिंथियों 3:11–14 में लिखा है :

क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता। और यदि कोई इस नेव पर सोना या चान्दी या बहुमोल पत्थर या काठ या घास या

फूस का रद्दा रखता है। तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा; इसलिये कि आग के साथ प्रगट होगा: और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है। जिस का काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा।

प्रभु यीशू जो नींव है उस पर सोना, चाँदी और बहुमुल्य पत्थर है और वे बने रहेंगे, और ''वह दिन उसे बताएगा'' कि वह सही इमारत है। फिर, काठ, घास और फूस है और न्याय की आग उसे जला देगी, और वर्तमान में हम उसी समय में है। परंतु ध्यान दे कि इमारत बन जाने पर और बनाने के काम पूरा हो जाने पर, अर्थात परमेश्वर के उद्धार की योजना का अंत होने पर इमारत की वस्तूओं को ''आग'' में डाला जाता है, यह उस इमारत के दृष्टांत के समान है जो पत्थर पर बनाई गई। इमारत आँधी के सामने टिकी रही और अंत तक मजबूत बनी रही। जब आँधी चली गई तब भी इमारत बनी रही। दुसरी ओर, मुर्ख ने अपना घर बालू पर बनाया, न कि मसीह पर। तब वही आँधी आई। यदि आप दृष्टांत को पढे तो यह वही भाषा और वही आँधी है जो मुर्ख के घर पर आई, वैसे ही जो बुद्धीमान के घर पर आई। फर्क यह है कि मुर्ख का घर ध्वस्त होकर नष्ट होता है। वह अंत तक नही टिका रहा। उस दृष्टांत में परमेश्वर यह शिक्षा दे रहा है कि, वह सब को आग से परखेंगा और उद्धार पाए हुओं और उद्धार न पाए हुए सभी को न्याय के दिन से गुजरना होगा। वहाँ सोना, चांदी और बहुमुल्य पत्थर और काठ, घास और फूस होगी, और वह दिन उसे बताएगा कि कौन स्थिर रहता है। जो अंत तक स्थिर रहते है, वे बचाए जाएंगे और जो असफल होते है वे काठ, घास और फूस है, और वे जल जाएंगे, जो संकेत है कि वे कभी उद्धार नही पाए थे। परमेश्वर 21 मई 2011 से यही करते आ रहा है। वह अपने ''हस्तकृती'' को परखते आ रहा है, जो ''सोना, चांदी और बहुमुल्य पत्थर'' है, और जो बाकी है उन्हें आग में नाश कर रहा है।

1 कुरिंथियों 3:16–17 में लिखा है :

क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है? यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।

यहाँ पर परमेश्वर (एक क्षण के लिए) मंदिर का आत्मिक गुण प्रकट कर रहा है। वह विश्वासीयों से कहता है : ''तुम परमेश्वर का मंदिर हो। तुम्हें आग में डालना अवश्य है ताकि तुम उद्धार पाए हुए हो इस सत्य को प्रकट किया जा सके।''

प्रकाशित वाक्य 21:3 में, अर्थात परमेश्वर के उद्धार की योजना के अंतिम पडाव में, दुल्हन ने अपने आप को तैयार किया है। जिन्हें उद्धार पाना था, वे सब उद्धार पा चूके है और

आगे हम पढते है कि परमेश्वर कहता है कि परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच है और वह उनके साथ रहेगा, क्योंकि प्रकाशित वाक्य 21:3 में लिखा है :

फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा।

परमेश्वर का अपने लोगों के बीच में डेरा होना और वह उनका परमेश्वर होगा, इस संबंध में जो भाषा है, वह पुराने नियम से है। ऐसे संबंध हम कई जगहो पर देख सकते है, परंतु निर्गमन 29:42–46 में लिखा है :

तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यहोवा के आगे मिलाप वाले तम्बू के द्वार पर नित्य ऐसा ही होमबलि हुआ करे; यह वह स्थान है जिस में मैं तुम लोगों से इसलिये मिला करूंगा, कि तुझ से बातें करूं। और मैं इस्राएलियों से वहीं मिला करूंगा, और वह तम्बू मेरे तेज से पवित्र किया जाएगा। और मैं मिलाप वाले तम्बू और वेदी को पवित्र करूंगा, और हारून और उसके पुत्रों को भी पवित्र करूंगा, कि वे मेरे लिये याजक का काम करें। और मैं इस्राएलियों के मध्य निवास करूंगा, और उनका परमेश्वर ठहरूंगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा उनका परमेश्वर हूं, जो उन को मिस्र देश से इसलिये निकाल ले आया, कि उनके मध्य निवास करूं; मैं ही उनका परमेश्वर यहोवा हूं॥

यह वह भाषा है जो मिस्र से छुटकारे के बाद आने वाले समय पर लागू होती है, इस प्रकार यह जंगल के सफर के दौरान था जब इस्राएल निर्जल जंगल में भटकता रहा और परमेश्वर ने उन्हें निर्देश दिया कि वे उसके लिए डेरा बनाए और उसी में उसने डेरा किया, जो कि एक प्रतिकात्मक रूप है। निःसंदेह, परमेश्वर सर्वत्र है, परंतु यह परमेश्वर की अपने लोगों के मध्य उपस्थिती का दर्शक है, और परमेश्वर उसकी ऐसे चर्चा करता है कि मानों उसने वहाँ डेरा किया।

कई सैकडों वर्षों के बाद, 1 राजा में परमेश्वर ने दाऊद के मन में यह बात डाली कि वह उसके लिए भवन बनाए। यद्यपि, दाऊद ने काफी तैयारीया की थी, पर परमेश्वर ने उसे ऐसा नही करने दिया क्योंकि वह युद्ध करनेवाला मनुष्य था, बल्कि परमेश्वर का भवन निर्माण उसके पुत्र सुलेमान को करना था। 1 राजा 6:11–14 में लिखा है :

तब यहोवा का यह वचन सुलैमान के पास पहुंचा, कि यह भवन जो तू बना रहा है, यदि तू मेरी विधियों पर चलेगा, और मेरे नियमों को मानेगा, और मेरी सब आज्ञाओं पर चलता हुआ उनका पालन करता रहेगा, तो जो वचन मैं ने तेरे विषय में तेरे पिता दाऊद को दिया था

उसको मैं पूरा करूंगा। और मैं इस्राएलियों के मध्य में निवास करूंगा, और अपनी इस्राएली प्रजा को न तजूंगा। सो सुलैमान ने भवन को बनाकर पूरा किया।

सुलेमान ने जो मंदिर बनाया वह वैसा ही था जैसे मुसा के दिनों में जंगल में डेरा बनाया गया था, और वह वही स्थान भी था जहाँ परमेश्वर ने डेरा किया। जब हम उस घर या मंदिर के विषय में पढते है, तब 1 राजा 8:1 में लिखा है :

तब सुलैमान ने इस्राएली पुरनियों को और गोत्रों के सब मुख्य पुरुष जो इस्राएलियों के पूर्वजों के घरानों के प्रधान थे,उन को भी यरूशलेम में अपने पास इस मनसा से इकट्ठा किया, कि वे यहोवा की वाचा का सन्दूक दाऊदपुर अर्थात सियोन से ऊपर ले आएं।

दस आज्ञओं में संदुक था और यह परमेश्वर की उपस्थिती की तस्वीर थी, और संदुक परमेश्वर के निवास की तस्वीर था। इस प्रकार उन्होंने भवन निर्माण पूरा किया, और आगे 1 राजा 8:2–13 में लिखा है :

सो सब इस्राएली पुरुष एतानीम नाम सातवें महीने कें पर्व के समय राजा सुलैमान के पास इकट्ठे हुए। जब सब इस्राएली पुरनिये आए, तब याजकों ने सन्दूक को उठा लिया। और यहोवा का सन्दूक, और मिलाप का तम्बू, और जितने पवित्र पात्र उस तम्बू में थे, उन सभों को याजक और लेवीय लोग ऊपर ले गए। और राजा सुलैमान और समस्त इस्राएली मंडली, जो उसके पास इकट्ठी हुई थी, वे सब सन्दूक के साम्हने इतनी भेड़ और बैल बलि कर रहे थे, जिनकी गिनती किसी रीति से नहीं हो सकती थी। तब याजकों ने यहोवा की वाचा का सन्दूक उसके स्थान को अर्थात भवन के दर्शन-स्थान में, जो परमपवित्र स्थान है, पहुंचाकर करूबों के पंखों के तले रख दिया। करूब तो सन्दूक के स्थान के ऊपर पंख ऐसे फैलाए हुए थे, कि वे ऊपर से सन्दूक और उसके डंडों को ढांके थे। डंडे तो ऐसे लम्बे थे, कि उनके सिरे उस पवित्र स्थान से जो दर्शन-स्थान के साम्हने था दिखाई पड़ते थे परन्तु बाहर से वे दिखाई नहीं पड़ते थे। वे आज के दिन तक यहीं वर्तमान हैं। सन्दूक में कुछ नहीं था, उन दो पटरियों को छोड़ जो मूसा ने होरेब में उसके भीतर उस समय रखीं, जब यहोवा ने इस्राएलियों के मिस्र से निकलने पर उनके साथ वाचा बान्धी थी। जब याजक पवित्रस्थान से निकले, तब यहोवा के भवन में बादल भर आया। और बादल के कारण याजक सेवा टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया था। तब सुलैमान कहने लगा, यहोवा ने कहा था, कि मैं घोर अंधकार में वास किए रहूंगा। सचमुच मैं ने तेरे लिये एक वासस्थान, वरन ऐसा दृढ़ स्थान बनाया है, जिस में तू युगानुयुग बना रहे।

यहाँ पर हम वही भाषा पाते है। यह परमेश्वर का सनातन निवास स्थान है। निश्चय ही, जब हम कनान देश के विषय में सनातन निवास स्थान के रूप में पढते है, तब परमेश्वर कनान का उपयोग नए आकाश और नए पृथ्वी की तस्वीर के रूप में करते है। यह भौतिक कनान वास्तव में सनातन नही है। उसी प्रकार, सुलेमान ने बनाया भवन भी भौतिक निर्माण था और वह भवन युगानुयुग बना रहे, इसका कोई विकल्प नही था। वस्तुस्थिती में वह भवन ध्वस्त कर दिया गया। जब बेबिलोन के लोगो ने येरूशलेम में प्रवेश किया, उन्होंने उस मंदिर का नाश किया, इसलिए निश्चय ही यह सनातन निवास स्थान नही था। भौतिक मंदिर का विनाश हुआ था यह बात बाईबल से सिद्ध की जा सकती है, पर फिर भी, परमेश्वर यहाँ उसके विषय में कहता है कि यह युगानुयुग उसका निवास स्थान है। वह युगानुयुग होने से दूर था। यह केवल कुछ ही सैकडों साल रहा और फिर वह भवन नाश हुआ।

चुंकि हम जानते है कि परमेश्वर झुठ नही बोलता और ना ही कोई गलती करता है, वह उस भौतिक भवन के विषय में नही कह रहा होगा क्योंकि , उस भवन का विनाश होगा यह वह जानता था। परंतु वह एक तस्वीर बनाने के लिए इस भाषा का उपयोग कर रहा है – परमेश्वर का सनातन निवास स्थान भौतिक मंदिर नही हो सकता, बल्कि वह आत्मिक मंदिर है। हम इसे इब्रानीयो 3:1–6 में देखते है :

सो हे पवित्र भाइयों तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो। जो अपने नियुक्त करने वाले के लिये विश्वास योग्य था, जैसा मूसा भी उसके सारे घर में था। क्योंकि वह मूसा से इतना बढ़ कर महिमा के योग्य समझा गया है, जितना कि घर का बनाने वाला घर से बढ़ कर आदर रखता है। क्योंकि हर एक घर का कोई न कोई बनाने वाला होता है, पर जिस ने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर है। मूसा तो उसके सारे घर में सेवक की नाईं विश्वास योग्य रहा, कि जिन बातों का वर्णन होने वाला था, उन की गवाही दे। पर मसीह पुत्र की नाईं उसके घर का अधिकारी है, और उसका घर हम हैं, यदि हम साहस पर, और अपनी आशा के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।

परमेश्वर की संतान वह घर है जो मसीह ने बनाया है, यह धर पत्थरों से नही बल्कि परमेश्वर के चुने हुए लोागें से बना है। इसलिए 1 पतरस 2:4–5 में लिखा है :

उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ, और बहुमूल्य जीवता पत्थर है। तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बन कर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हों।

यह विश्वासीयों की देह है, उन सब की जिन्हें परमेश्वर ने हाबेल से लेकर जख-या तक उद्धार दिया। 21 मई 2011 को परमेश्वर ने स्वर्ग का द्वार बंद करने से पहले उसने जिस प्रत्येक मनुष्य का उद्धार किया वह प्रत्येक जीवीत पत्थर है जिसे प्रभु यीशू ने बनाया। पुराने नियम में पवित्र स्थान इसी का प्रतिक है। सुलेमान का घर इसी का प्रतिक है। इसलिए परमेश्वर कह सकता है कि वह घर युगानुयुग परमेश्वर का निवास स्थान है। इसलिए हम प्रकाशित वाक्य 21 में इस प्रकार की भाषा पाते है, जैसा कि हमारे संदर्भ पद प्रकाशित वाक्य 21:3 में लिखा है :

फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा।

वह इम्मानुएल या ''परमेश्वर हमारे साथ'' है। प्रभु यीशू ने मानव जाति में प्रवेश किया और मनुष्य के बीच डेरा किया, परंतु उस घर में रहस्यमय और महिमामय रीति से डेरा करना परमेश्वर की योजना थी, जो चुने हुओं की देह है और वह वहाँ सदा सर्वदा के लिए अपना डेरा करेगा।

सुलेमान ने घर को पूरा किया और सातवें महिने के पर्व के दिन उसका समर्पण किया, यह बात महत्वपूर्ण है। सातवें महिने में कौनसा पर्व आता है? यह झोपडियों का पर्व है और इसी पर्व के दिन, उस घर का, जिसे पूरा किया गया, समर्पण किया जाता है। झोपडियों के पर्व के अंतिम दिन ही इस्राएलीयों को आनंन्द के साथ ''घर'' भेजा गया था। इतिहास में ऐसा ही हुआ था, परंतु अब हम दिलचस्प, एक जैसी परिस्थिती को पाते है, आत्मिक परिस्थिती इसका अपवाद है। परमेश्वर ने अपना आत्मिक घर पूरा किया है, ''**उसका घर हम हैं**''

मेम्नें की जीवनी किताब में जिस–जिसका नाम लिखा था, उस प्रत्येक जीवीत पत्थर से परमेश्वर ने निवास स्थान के लिए घर बनाया है, इफिसियों के अनुसार, जब परमेश्वर का घर पूरा होता है, तब परमेश्वर के पास एक ऐसा समय खंड है जिसमें वह ''सोना, चांदी, बहुमुल्य पत्थर'' और ''काठ, घास, फूस'' को परखेगा, जैसे कि हम 1 कुरिंथियो अध्याय 3 में पढते है, और वह ''दिन'' दिखाएगा कि कौन मजबूत है और स्थिर रहता है, और कौन स्थिर नही रहता है। हम वर्तमान समय में वही है।

आज हमारे पास बाईबल की समय रेखा है जो हमें न्याय के सम्भव कालखंड के रूप में 1600 दिन देती है जो उस समय का समापन है। 1600 दिनों के पश्चात 40 वा चालीस आता है और यह सम्पूर्ण न्याय का 10,000 वा दिन भी है क्योंकि 21 मई 1988 को परमेश्वर के घर से न्याय का आम्भ हुआ, इस प्रकार यह वह दिन है जिसकी ओर हम ''पूरा होने'' के दिन के रूप में और परिक्षा के अंत के रूप में देख रहे है और यह

झोपडियों के दिन का अंतिम दिन भी है, जो वह समय है जब सुलेमान के दिनों में ऐतिहासीक चित्र का समय था जब घर की रचना पूरी हुई थी और हर कोई घर वापस गया था। घर की रचना हो चुकी है और घर में परमेश्वर का डेरा है जैकि हम 1 राजा के अध्याय 8 में पढते है। पूरे किए हुए घर में संदूक रखा गया और पर्व पूरा हुआ।

इस प्रकार वर्तमान समय में आत्मिक रीति से हो रही कई दिलचस्प समान बाते होते हुए हम देख रहे है। यहाँ हर बात में सहमती है जिस में घर को पूरा बनाए जाने और धुँए से घर भर जाने ताकि कोई भी मनुष्य अंदर न जा सके, इस भाषा का भी समावेश है। यह वैसा ही है जैसा हम न्याय के दिन के संदर्भ में प्रकाशित वाक्य 15 में पढते है। और अब हमें आशा और अपेक्षा है क्योंकि परमेश्वर ने अपना आत्मिक घर पूरा किया है, ''उसका घर हम है।'' और यह हम जानते है, है ना? हम यह बाईबल से जानते है। हम जानते है कि परमेश्वर ने अपने घर की रचना पूरी की और हम झोपडियों के पर्व के अंतिम दिन का इंतजार कर रहे है ताकि देख सकें कि इस संसार के लिए इन सारी बातों का अंत है या नही क्योंकि यहाँ पर यह बात बेवजह नही लिखी है जो हम प्रकाशित वाक्य 21:1 में पढते है :

फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।

यह नया येरूशलेम, वह पवित्र नगर है जो तयार की हुई दुल्हन है। यह परमेश्वर के युगानुसग निवास स्थान के लिए परमेश्वर का डेरा है। इसका कैसे संबंध जुडता है क्या आप इसे देख सकते है? एक बार जब घर पूरा होता है और परमेश्वर का डेरा पूरा होता है, तब परमेश्वर उसमें निवास के लिए प्रवेश करता है। जब हम इस 1600 दिनों के अंतिम दिनों की ओर अति दिलचस्प रीति से देखते है तब हमारी यही आशा है। परमेश्वर अपनी प्रजा में प्रवेश करेगा और युगानुयुग के लिए उन के साथ डेरा करेगा, क्या ऐसा होगा?